



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4
PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 4]

नई दिल्ली, बुधवार, मई 11, 1983/वैशाख 21, 1905

No. 4]

NEW DELHI, WEDNESDAY, MAY 11, 1983/VAISAKHA 21, 1905

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate
compilation

होम्योपैथी केन्द्रीय परिषद्

अधिसूचना

नई दिल्ली, 11 मई, 1983

संख्या : 7-1/83-सी० सी० एच :—होम्योपैथी

केन्द्रीय परिषद्, केन्द्रीय सरकार की पूर्व
मंजूरी से होम्योपैथी केन्द्रीय परिषद् अधिनियम, 1973
(1973 का 59) की धारा 20 की उपधारा (1) और
धारा 33 के खण्ड (झ), (ञ) और (ट) द्वारा प्रदत्त
शक्तियों का प्रयोग करते हुए, निम्नलिखित विनियम बनाती
है अर्थात्:—

भाग—1

प्रारंभिक

1. संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ : (1) इन विनियमों का
संक्षिप्त नाम होम्योपैथी (श्रेणीकृत डिग्री पाठ्यक्रम)
विनियम, 1980 है।

(2) ये भारत के राजपत्र में अपने प्रकाशन की तारीख
को प्रवृत्त होंगे।

2. परिभाषाएं : इन विनियमों में जब तक कि संदर्भ से
अन्यथा अपेक्षित न हों,

(i) "अधिनियम" से होम्योपैथी केन्द्रीय परिषद् अधिनियम
1973 (1973 का 59) अभिप्रेत है;

(ii) "पाठ्यक्रमों" से अभिप्रेत हैं होम्योपैथी में अध्ययन
के पाठ्यक्रम अर्थात्:—

(क) डी० एच० एम० एस० (डिप्लोमा इन
होम्योपैथिक मेडिसिन एंड सर्जरी); और

(ख) बी० एच० एम० एस० (बेचलर आफ
होम्योपैथिक मेडिसिन एंड सर्जरी)।

(iii) "डिप्लोमा" से होम्योपैथी (डिप्लोमा पाठ्यक्रम)
विनियम, 1980 के विनियम 2 के खण्ड (iii)
में यथा परिभाषित होम्योपैथी डिप्लोमा अभिप्रेत है।

(iv) "डिग्री" से इन विनियमों के विनियम 3 में यथा
उपबंधित होम्योपैथी में डिग्री या होम्योपैथी (डिग्री
पाठ्यक्रम) विनियम 1980 के विनियम 2 के खण्ड
(iv) में यथा परिभाषित कोई डिग्री अभिप्रेत है;

- (v) "होम्योपैथी महाविद्यालय" से ऐसा कोई होम्योपैथी आयुर्विज्ञान महाविद्यालय अभिप्रेत है जो किसी बोर्ड या विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है और केन्द्रीय परिषद् द्वारा मान्यताप्राप्त है;
- (vi) "निरीक्षक" से अधिनियम की धारा 17 की उपधारा (1) के अधीन नियुक्त किया गया कोई चिकित्सीय निरीक्षक अभिप्रेत है;
- (vii) "अध्यक्ष" से केन्द्रीय परिषद् का अध्यक्ष अभिप्रेत है;
- (viii) "द्वितीय अनुसूची" और "तृतीय अनुसूची" से, अधिनियम की क्रमशः द्वितीय अनुसूची और तृतीय अनुसूची अभिप्रेत है;
- (ix) "पाठ्य विवरण" और "पाठ्यचर्या" से, उन भिन्न-भिन्न पाठ्यक्रमों के लिए पाठ्यचर्या और पाठ्य विवरण अभिप्रेत है जो केन्द्रीय परिषद् ने इन विनियमों, होम्योपैथी (डिप्लोमा पाठ्यक्रम) विनियम, 1980 और होम्योपैथी (डिग्री पाठ्यक्रम) विनियम, 1980 के अधीन विनिर्दिष्ट किए हैं;
- (x) "अध्यापन अनुभव" से केन्द्रीय परिषद् द्वारा मान्यताप्राप्त किसी महाविद्यालय या किसी अस्पताल में संबंधित विषय में अध्यापन अनुभव अभिप्रेत है;
- (xi) "परिदर्शक" (विजिटर) से, अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (1) के अधीन नियुक्त किया गया कोई परिदर्शक अभिप्रेत है।

भाग — 2

पाठ्यक्रम

3. श्रेणीकृत डिग्री पाठ्यक्रम: (i) बी० एच० एम० एस० (श्रेणीकृत डिग्री) डिग्री पाठ्यक्रम में ऐसा कोई पाठ्यक्रम समाविष्ट है जो इन विनियमों में उपबंधित पाठ्य विवरण और पाठ्यचर्या से मिल कर बना है तथा जो 2 वर्ष में पूरा होता है। इनसे अन्तिम डिग्री परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने के पश्चात् छह मास की अन्तः शिक्षता भी सम्मिलित है;

(ii) अन्तः शिक्षता होम्योपैथी महाविद्यालय से सम्बद्ध अस्पताल में और यदि अस्पताल में अपने सभी विद्यार्थियों के लिए अन्तः शिक्षता की व्यवस्था नहीं है तो ऐसे विद्यार्थी अन्तः शिक्षता ऐसे होम्योपैथी अस्पताल या औषधालय में प्राप्त कर सकते हैं जिसका संचालन केन्द्रीय सरकार या कोई राज्य सरकार या स्थानीय निकाय करता हो;

(iii) विनिर्दिष्ट अवधि की अन्तः शिक्षता पूरी हो जाने और उस संस्था के, जिसमें अन्तः शिक्षता प्राप्त की गई है प्रधान की सिफारिश पर यथास्थिति संबंधित बोर्ड या विश्वविद्यालय सफल अभ्यर्थियों को डिग्री प्रदान करेगा।

भाग — 3

पाठ्यक्रम में प्रवेश

4. न्यूनतम ग्रहण्यता ऐसे अभ्यर्थी को ही बी० एच० एम० एस० श्रेणीकृत पाठ्यक्रम में प्रवेश दिया जाएगा जिसने होम्योपैथी

में कम से कम चार वर्ष के किसी डिप्लोमा पाठ्यक्रम की अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है।

भाग — 4

पाठ्य चर्या

5. विषय: बी० एच० एम० एस० (श्रेणीकृत डिग्री) पाठ्यक्रम के अध्यापन और परीक्षा के लिए विषय निम्नलिखित हैं, अर्थात्:—

- (i) विकृति विज्ञान, जीवाणु विज्ञान और परजीवी विज्ञान
- (ii) जीव रसायन
- (iii) चिकित्सा और बाल चिकित्सा व्यवसाय
- (iv) मनोविज्ञान और तर्कशास्त्र के मूल सिद्धान्त,
- (v) प्रसूति विज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान,
- (vi) शल्य क्रिया जिनके अंतर्गत कर्ण, नासां एवं कंठ और नेत्र विज्ञान भी हैं;
- (vii) आयुर्विज्ञान का आगमन,
- (viii) चिरकालिक रोग और होम्योपैथी दर्शन,
- (ix) रोगी वृत्त लेना और होम्योपैथी रिपर्टरीकरण,
- (x) होम्योपैथी मेडोरिया मेडिका,
- (xi) सामाजिक और विरोधक आयुर्विज्ञान जिसके अंतर्गत स्वास्थ्य शिक्षा और वंश आयुर्विज्ञान भी है,
- (xii) होम्योपैथी चिकित्सा शास्त्र
- (xiii) आयुर्विज्ञान का इतिहास।

भाग — 5

पाठ्य विवरण

6. श्रेणीकृत डिग्री पाठ्यक्रम के लिए पाठ्य विवरण

बी० एच० एम० एस० (श्रेणीकृत डिग्री) पाठ्यक्रम के लिये पाठ्यक्रम विवरण निम्नलिखित है अर्थात्—

‘क’

जीव रसायन और विकृति विज्ञान

(जिसके अंतर्गत जीवाणु विज्ञान और परजीवी विज्ञान भी हैं)

(1) विकृति विज्ञान और जीव रसायन का अध्यापन बहुत सतर्कतापूर्वक और न्यायपूर्ण रूप में किया जाना चाहिए। एलोपैथी ऊतक चिकित्सा विज्ञान और जीव रसायन को रुग्ण परिस्थितियों से संबद्ध करके यह समझता है कि जीवाणु रोगों के परिस्थितिजन्य कारण हैं किन्तु होम्योपैथी रोगों को पूर्णतः प्राणशक्ति का गतिशील विक्षोभ (डिस्ट वेसेज) मानवी है जिसकी अभिव्यक्ति ऐसी सचेत संवेदनाओं और कार्यों से होती है जिनके कारण व्यापक ऊतक परिवर्तन हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता है। ऊतक परिवर्तन स्वयं रोगों का आवश्यक भाग नहीं है और तदनुसार वह होम्योपैथी औषधि देकर उपचार को विषयवस्तु नहीं है।

(2) लुप्त पेस्चर और राबर्ट कोच की खोजों के पश्चात् से चिकित्सा क्षेत्र में इस सिद्धांत में विश्वास किया जाने लगा है 'कि कीटाणुओं का नाश करके रोग को ठीक करो'। किन्तु पश्चात्तर्वर्ती अनुभव से यह प्रकट हुआ कि इसके अलावा एक भ्रामक तथ्य और भी है जिसके कारण रोग का संक्रमण और वास्तविक उत्पत्ति होती है यह तथ्य है रोगी की सुग्राह्यता (ससेप्टीबिलिटी)। चूंकि होम्योपैथी मानव के विभिन्न श्वसास्थ्यकर तथ्यों सुक्ष्मजीवी या अन्यथा के प्रति प्रतिक्रियाओं से ही मुख्यतया संबन्धित है अतः रोग उत्पादन में जीवाणु या विषाणु की भूमिका होम्योपैथी के क्षेत्र में पूर्णतः गौण है।

(3) यद्यपि जीव रसायन का ज्ञान कुशल होम्योपैथी चिकित्सक के लिए आवश्यक है तथापि इसकी आवश्यकता चिकित्साशास्त्र के लिए न होकर, निदान, पूर्वानुमान रोगों की रोकथाम और सामान्य व्यवस्था के लिए है। इसी प्रकार विकृति विज्ञान का ज्ञान, रोग अवधारण पूर्वानुमान रोगी और रोग के लक्षणों के बीच विभेद और उपयुक्त होम्योपैथी औषधि की खुराक और शक्ति का निर्णय करने के लिए आवश्यक है।

(4) विद्यार्थियों को विकृति विज्ञान का केवल छोटा मोटा आधारीक प्रशिक्षण ही जिसका कोई विशेषज्ञीय शुकाव न हो, दिया जाना चाहिए। विकृति विज्ञान के शिक्षकों को नहीं भूलना चाहिए कि उनका उद्देश्य चिकित्सा व्यवसायियों को विशिष्टतः होम्योपैथी चिकित्सा व्यवसायियों को, प्रशिक्षण देना है न कि विकृति विज्ञान के प्रविधिज्ञों (टेक्नीशियन) या विशेषज्ञों को प्रशिक्षित करना। जीवित न कि मृत रोगी ही इस विषय के अध्यापन का मुख्य प्रसंग है।

(5) विकृति विज्ञान के अनुबोधन का प्रयोजन यह है कि विद्यार्थी व्यक्ति परख लक्षणों और वस्तुपरक लक्षणों को सहबद्ध कर सके, वैज्ञानिक लक्षणों का निर्वाचन कर सके और उनका पारस्परिक संबंध समझ सके क्योंकि यही विकृति विज्ञान का प्रमुख आधार है।

(क) जीव रसायन (शरीर क्रिया विज्ञान); हार्मोन (डी० एच० एम० एस० पाठ्यक्रम की तुलना में अधिक व्यौरों सहित); प्रवसन रसायन अम्ल-क्षार संतुलन एनजाइम तंत्रिका रसायन जिसके अन्तर्गत तंत्रिका तंत्र का विशिष्ट चयापचय (मेटाबोलिज्म) भी है।

ऊर्जा चयापचय विद्यार्थियों को उपयुक्त प्रदर्शन किए जाए। मानव के तंत्रिका तंत्र की नैदानिक परीक्षा तंत्रिका विज्ञान का केस प्रदर्शित किया जाए। वृक्कीय (रीनल कार्य) परीक्षण जिगर कार्य परीक्षण एन० पी० एन०, क्लोरोइड, ग्लूकोज, सीरम, प्रोटीन के लिए रक्त विश्लेषण।

(ख) सूक्ष्म प्राणिविज्ञान (क्रमबद्ध जीवाणु विज्ञान) कानीबैक्टीरिया और फाइक्रेला रिक्टेसिया और विषाणु (विषाणु विज्ञान और ट्राइजेनेटस के रिक्टेसिया अनुदेश) पारबोविषाणु, (बुसैला, होमोफिल्म, बोरोलिया, फास्टोरोला, स्पाइरोटीज, स्पाइरोजीआ और टाक्सोप्लाजमा हीमोफ्लागलेटीज सेस्टोड, नेमाटोड

(ग) विशेष अंगों का विकृति विज्ञान

(घ) सामान्य अव्यवस्था में विकारी शरीर रचना (स्थूल)

(ङ) लेक्चर और या प्रदर्शन नैदानिक और रसायनिक विकृति विज्ञान।

नैदानिक और रसायनिक विकृति विज्ञान रक्त विभिन्न प्रयोजनों के लिए सग्रहण/ हीमोग्लोबिन का आकलन कुल गणना, आर० बी० सी० प्लेटलेट्स, एम० सी० एच०, एम० सी० बी०, एम० सी० एच० भी० महत्व विभेदी प्रवेत कोशिका गणना, मलेरिया परजीवी लीशमैनिया, पोरीकेरल रक्त में ट्राइपैनोमोम मज्जा या स्क्लीन पंक्चर सामग्री आर० बी० सी० और डब्ल्यू बी० सी० का विकास, ल्यूकेमिया लोडित कोशिका तलछटीकरण दर, रक्त संवर्ध (क्लचर)। एन्डिहाइड और चोपड़ा परीक्षण रक्त। स्वर्ण और स्कंदन (कोआगुलेशन) समय / प्रोथाम्बिन समय / रक्त समूह, रक्त शर्करा परिमाणन, शर्करा सह्यता परीक्षण, जिगर कार्य परीक्षण, विशिष्टतः बिलोबिन, बेन्डनबर्ग प्रतिक्रिया, पीलिया (हृक्टेरस) सूचकांक प्रभावी प्रयोगाहार। मूत्र यूरिया परिमाणन समाप्ति परीक्षण, जलरोग, मूत्र निक्षेप, मल, विभिन्न अतिविभेदीकरण बेसीलेरी, पेचिश, अमीबी पेचिश, गलस्त्राव की परीक्षा, यूरक, सी० एस० एफ० एसिटिस और प्युरा तरल।

प्रयोगात्मक

ऊपरी और निम्न प्रवसन पथ संक्रमण प्रयोगशाला निदान वस्तु और पेचिश दोष का प्रयोगशाला। निदान संतति स्थिति का प्रयोगशाला निदान, सीरमी (सेरियोलाजीकल) परीक्षण रोग निरोधी उपाय उनके अनुपंगों (साइड) प्रभाव, और होम्योपैथी औषधियों से व्यवस्था।

निरोधक और सामाजिक आयुर्विज्ञान और परिवार कल्याण।

यह विषय अत्यंत महत्वपूर्ण है और आयुर्विज्ञान अध्ययन के दौरान सर्वत्र विद्यार्थी का ध्यान निरोधक आयुर्विज्ञान की महत्ता और स्वास्थ्य अच्छा बनाने के उपायों की ओर आकर्षित किया जाता रहना चाहिए।

उसका कार्य रोग दूर करने के प्रयोजनों के लिए होम्योपैथी औषधियों निश्चित करना मात्र नहीं है। उसे तो समाज में इससे भी व्यापक भूमिका निभानी है। उसे राष्ट्रीय समस्याओं की, नगरीय और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए जिससे कि उसे न केवल रोगहरण के क्षेत्र में अपितु सामाजिक और निरोधक आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में जिसमें परिवार कल्याण संबंधी औषधियां सम्मिलित हैं, कारगर भूमिका निभाने का दायित्व सौंपा जा सके।

1. प्रारम्भिक लेक्चर अपने देश की स्वास्थ्य समस्याओं पर विचार और उनका समाधान (निर्देश: फीड आफ हेल्थ हेमीमन की लघु कृति)।

2. औद्योगिक स्वास्थ्य :

(क) औद्योगिक कर्मकार की सुरक्षा और कल्याण औद्योगिक संकट ।

(ख) व्यवसायिक रोग ।

3. चिकित्सा सांख्यिकी :

सांख्यिकी के सिद्धांत और तत्व—जन्म मृत्यु सांख्यिकी

4. निरोधक आयुविज्ञान :

(क) सामान्य सिद्धांत और साधारण संचरणशील रोग प्रदर्शनों द्वारा व्यापक व्योरे दिखाए जाएं डिप्लोमा पाठ्यक्रम के अन्तर्गत आने वाले विषय की वाबत के लेक्चर और

(ख) रोगों का प्राकृतिक इतिहास ।

5. पर्यावरण स्वच्छता डिप्लोमा पाठ्यक्रम से अधिक व्यापक व्योरे दिए जाएं ।

(i) कीट—नाशीकीट और विसंक्रमण रोगों की दृष्टि से कीट नियंत्रण ।

(ii) प्रोटोजूअल और कृमि रोग प्रोटोजोआ और कृमि का जीवन चक्र—उनकी रोक थाम ।

6. मातृ और बाल स्वास्थ्य, विद्यालय स्वास्थ्य सेवा, स्वास्थ्य शिक्षा, मानसिक स्वच्छता प्राथमिक सिद्धांत, सामाजिक आयुविज्ञान—उसका लक्ष्य और पद्धतियां ।

7. परिवार कल्याण—जनपद विज्ञान (डेमोग्राफी)—संचार चेतन, राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम, गर्भनिरोधकों के प्रयोग का ज्ञान, जनसंख्या वृद्धि और उसकी रोकथाम ।

8. चूजिनक्स सिद्धान्त आनुवंशिकता का क्रम परेषण, आनुवंशिकता और स्वास्थ्य, सार्वजनिक स्वास्थ्य और आनुवंशिकता तथा रोग ।

9. सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रशासन और अन्तर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य संबंध ।

ध्यान दीजिए :

फील्ड प्रदर्शन—जल शुद्धिकरण संयंत्र संक्रामक रोग अस्पताल मानासिक रोगियों के लिए संस्थाएं, स्वास्थ्य केन्द्र आदि ।

होम्योपैथी रिपोर्टरी

होम्योपैथी मेटीरिया मेडिका लक्षणों का एक विश्वकोष है । कोई भी व्यक्ति सभी औषधियों के सभी लक्षणों को तथा उनके लक्षणों पर आधारित श्रेणीकरण को याद नहीं कर सकता है । रिपोर्टरी एक विषयसूची है अथवा मेटीरिया मेडिका के लक्षणों का सुव्यवस्थित और औषधियों के संबंधित श्रेणीकरण को दर्शाते करने वाला एक सूचीपत्र है । रिपोर्टरी की सहायता के बिना होम्योपैथी का व्यवसाय करना असंभव है और स्वयं में पूर्ण रिपोर्टरी ही सर्वोत्तम रिपोर्टरी है ।

औषधियों और रोगस्थितियों के बीच अपेक्षित संबंध का, विभिन्न तरीकों से और सीमाओं तक पता लगाना संभव है

और इसलिए अनेक प्रकार की रिपोर्टरियां हैं जिनका उपयोग औषधि को खोज निकालने में अपना विशिष्ट महत्व है ।

रोगीवृत्त लेना :

रोगीवृत्त लेने में कठिनाईयां—रोगीवृत्त अभिलिखित करना और अभिलेख की उपयोगिता ।

लक्षणों का समग्ररूप, नुस्खा लिखने के लिए लक्षण, असामान्य, विचित्र और विशिष्ट लक्षण, साधारण और वैयक्तिक लक्षण, औषधि विलगीकरण लक्षण और वृत्त का तथा सामान्य और असामान्य लक्षणों का विश्लेषण / लक्षणों का श्रेणीकरण और मूल्यांकन / मानसिक लक्षणों महत्व / साधारण लक्षणों की किस्में और स्रोत ।

1. रिपोर्टरी का इतिहास
2. रिपोर्टरियों की किस्में
3. बौनिंगसन (Boenninghansen) के अनुसार निकाले गए 3 रोगीवृत्तों का प्रदर्शन
4. केन्ट की रिपोर्टरी—रोगीवृत्त के साथ उच्च अध्ययन
5. बोगस बौनिंगसन रिपोर्टरी—रिपोर्टरी के लिए उनका योगदान
6. काई रिपोर्टरी और 5 रोगीवृत्तों का प्रदर्शन, काई रिपोर्टरी की सीमाएं और लाभ । प्रदर्शनों के साथ सैद्धान्तिक लेक्चर ।

प्रयोगात्मक

विद्यार्थी और रिपोर्टरी :-

- (1) केन्ट के अनुसार 15 संक्षिप्त रोगीवृत्त
- (2) 10 चिरकालिक रोगीवृत्त (केन्ट के अनुसार दीर्घ रोगीवृत्त)
- (3) 5 रोगीवृत्तों की क्रास चेंकिंग

होम्योपैथी चिकित्सा और आयुविज्ञान

होम्योपैथी का रोग के प्रति एक सुभिन्न दृष्टिकोण है । वह रोग की पहचान न तो उसके प्रमुख लक्षणों से और न शरीर के किसी अंग या भाग के लक्षणों से करती है । वह रोगी का समग्र रूप में उपचार करती है । रोगी के कुल लक्षणों से जो कुछ प्रकट होता है उसके अनुसार वह उपचार करती है । अतः रोगी के केवल रोग का नाम, होम्योपैथी के लिए महत्वपूर्ण नहीं है ।

होम्योपैथी का यह आधारभूत सिद्धांत कि वह रोगी का उपचार करता है रोग का नहीं, विद्यार्थियों के मस्तिष्क में भली प्रकार बैठ गया जाना चाहिए । अतः वे सभी सच्चे होम्योपैथ बन सकेंगे जब उक्त दृष्टिकोण उनमें समाविष्ट कर दिया जाएगा ।

आयुर्विज्ञान मूलतः एक प्रयोगात्मक विज्ञान है और उसे रोगी की शय्या के निकट न कि कक्षा में, अधिक समझा जा सकता है। अतः इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि महाविद्यालय में विद्यार्थियों के अध्ययन के उत्तरार्ध भाग में उन्हें विस्तृत नैदानिक प्रशिक्षण दिया जाए।

(क) आयुर्विज्ञान के सिद्धांतों और व्यवसाय में क्रमबद्ध अनुदेशन का पाठ्यक्रम—(डिप्लोमा पाठ्यक्रम के आगे प्रदर्शन द्वारा अधिक विस्तृत ब्यौरे बताएं जाएं—डिप्लोमा पाठ्यक्रम के अन्तर्गत आने वाले विषयों पर लेक्चर)।

(ख) नैदानिक काल के प्रथम तीन मासों में विद्यार्थी को, जब उसे रोगी का भारसाधन नहीं सौंपा जाता है, नैदानिक परीक्षा, जिसमें शारीरिक लक्षण, स्टैथेस्कोप, आपथेलमास्कोप आदि जैसे सामान्य उपकरणों का प्रयोग भी है, के प्राथमिक तरीकों का ज्ञान कराया जाना चाहिए।

(ग) होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र और नुस्खा लिखने की शिक्षा।

(घ) सुविधा की दृष्टि से यह सुझाव है कि आयुर्विज्ञान के नैदानिक पाठ्यक्रम के दो वर्षों के दौरान निम्नलिखित रीति में अनुदेशन न किया जाना चाहिए :—

(1) अनुप्रयुक्त शरीर रचना विज्ञान और अनुप्रयुक्त शरीर क्रिया विज्ञान।

(2) विभिन्न तंत्रों के रोग (जो कुछ डिप्लोमा पाठ्यक्रम में सिखाया न गया हो और ऐसे रोग भी जो आमतौर से कम होते हैं—यह होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र के प्रति निर्देश से समझाए जाएं)।

(3) मनोवैज्ञानिक आयुर्विज्ञान—शरीर-मन संबंध, सामान्यता (नार्मैलिटी) के आधार साइकी साधित्र वैयक्तिक प्रकार और लक्षण, स्वप्न, इ० इ० जी०। मानसिक वक्षता-कारण, स्थितियां, वृद्धावस्था के रोग। मनोविकृतिजन्य व्यक्तित्व, कायिक मूल के मानसिक रोग। विकारों मनः कायिक-विकार (साइको-सोमेटिक) सिद्धांत और होम्योपैथी, मनस्तंत्रिका विज्ञान (साइकोन्यूरोसिस) और मनोविक्षिप्ति (साइकोसिस) लक्षण-विज्ञान-होम्योपैथी चिकित्सा के अनुसार और मनश्चिकित्सा (साइकोथेरेपी)।

(4) त्वचाविज्ञान—होम्योपैथिक चिकित्सा के अनुसार जिसमें कुण्ठरोग सम्मिलित है।

(5) पर्यावरण और भौतिक कारक (एजेन्ट)—मनोवृत्ति का प्रभाव; विकिरण का प्रभाव; गति अस्वस्थता, सर्दी गर्मी का प्रभाव,

विद्युत शक्ति का प्रभाव, भारी धातुओं औषधियों आवि के विषों का प्रभाव, चिकित्साजन्य रोग।

(6) बाल चिकित्सा—उत्पत्ति और विकास पर जोर दिया जाए।

स्वस्थ और रोगावस्था में विकास-तत्त्व-नव-जात और कालपूर्ण शिशु जन्म-व्यवस्था और मानसिक विकास, व्यवहार समस्याएं—भावात्मक व्यवहार और उसकी समस्याएं। विकलांग बालक। होम्योपैथी चिकित्सा की दृष्टि में सामान्य बाल रोग।

टिप्पण :—(1) इस विषय को पढ़ाने वाले शिक्षक को, यह चाहिए कि वह पढ़ाने समय सदैव विद्यार्थी का ध्यान इन परिस्थितियों के निरोधक पक्षों की महत्ता की ओर आकर्षित करे।

(2) आयुर्विज्ञान की इन शाखाओं के अध्यापन का उद्देश्य यह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त ज्ञान कराना-होना चाहिए कि विद्यार्थी सामान्य स्थितियों, उनकी पहचान और उपचार से भली प्रकार परिचित हो जाएं।

(3) प्रत्येक विद्यार्थी 20 पूर्णरोगीवृत्त तैयार करेगा और प्रस्तुत करेगा।

आयुर्विज्ञान के लिखित प्रश्नपत्र निम्नलिखित रूप में विभाजित किए जाएंगे अर्थात् :—

प्रथम प्रश्नपत्र — संक्रामक रोग एण्डोक्राइन तंत्र के विकार, चया पचय के रोग और अल्पता रोग पाचनतंत्र और पेरिटोनियम के रोग। रक्त तिल्ली और लसिका ग्रन्थियों के रोग और ट्रापीकल रोग। होम्योपैथी चिकित्सा।

द्वितीय प्रश्नपत्र — लोकोमोटर तंत्र के रोग, हृदवाहिका तंत्र के रोग, मूत्रजननांगी तंत्र के रोग, बालरोग, तंत्रिका तंत्र के रोग मनोवैज्ञानिक औषधियां, सामान्य त्वचा रोग। होम्योपैथी चिकित्सा।

शल्यक्रिया और होम्योपैथी चिकित्सा

जब औषधि निष्फल हो जाती है तो शल्यक्रिया की भूमिका प्रारंभ होती है। बाहरी भागों की विकृत अवस्था ही, जिसमें यांत्रिक कौशल की आवश्यकता होती है, शल्य चिकित्सा का विषय है किन्तु जब क्षति इतनी व्यापक या गंभीर हो कि उससे अंगों में तीव्र प्रतिक्रिया उत्पन्न हो जाए तो औषधियों की सहायता से तत्काल उपचार आवश्यक है।

शल्यक्रिया रोगों के अन्त्य उत्पादों (एन्डप्रोडक्ट) को नष्ट करती है किन्तु शल्यक्रिया के पूर्ववर्ती और पश्चातवर्ती उपचार की आवश्यकता मूल विकृति को ठीक करने और अनुगमों (सीक्वेल) या जटिलताओं की रोकथाम के लिए होती है।

चूँकि होम्योपैथी में अनेक परिस्थितियों में आन्तरिक औषध-प्रयोग हो सकता है अतः औषध प्रयोग की भूमिका शल्यक्रिया की भूमिका से अधिक व्यापक है। इस दृष्टि से शल्यक्रिया का विस्तार सीमित है। किन्तु औषधि के अनु-पूरक के रूप में शल्यक्रिया का भी होम्योपैथी में एक विशिष्ट स्थान है। इसलिए शल्यक्रिया का अध्यापन भी तद् रूप होना चाहिए।

(क) शल्यक्रिया के सिद्धांतों का क्रमबद्ध रूप में अध्यापन पाठ्यक्रम।

(ख) नैदानिक प्रशिक्षण के प्रारंभिक मासों के दौरान, विद्यार्थी को, जब उसे रोगियों का भारसाधन नहीं सौंपा जाता है, नैदानिक परीक्षा के मूल सिद्धान्त बताए जाने चाहिए। इसके अन्तर्गत शारीरिक लक्षण, सामान्य उपकरणों का प्रयोग, धावों पर सैपसिस और एण्टीसेपसिस पट्टी बांधना आदि हैं।

(ग) शल्यक्रिया-पद्धति जिसमें भौतिक चिकित्सा सम्मिलित है, में प्रायोगिक अनुदेशन।

(घ) प्राणी की लघु शल्यक्रिया का शिक्षण,

(ङ) निम्नलिखित विषयों में अनुदेशन :

(1) विकिरण विज्ञान और विद्युत चिकित्सा विज्ञान तथा शल्यक्रिया में उनका उपयोग।

(2) रतिज रोग।

(3) विकलांग विद्या।

(4) दन्तरोग।

(5) शैशवावस्था और बालावस्था के शल्यक्रिया रोग।

(6) तन्त्रिका विज्ञान।

(7) कर्णनासा कंठ विज्ञान।

(8) नेत्रविज्ञान।

(च) होम्योपैथी चिकित्सा और नुस्खे लिखने का शिक्षण।

(छ) सुविधा की दृष्टि से यह सुझाव है कि शल्यक्रिया के नैदानिक पाठ्यक्रम के दौरान निम्नलिखित रूप में शिक्षण दिया जाना चाहिए, अर्थात्—

(1) अनुप्रायुक्त शरीर रचना विज्ञान और अनुप्रायुक्त शरीरक्रिया विज्ञान सामान्य शल्यक्रिया की प्रक्रिया।

(2) विभिन्न तन्त्रों के रोग—वे जो डिप्लोमा पाठ्यक्रम के अन्तर्गत नहीं हैं तथा सामान्य रोग विशिष्टतः होम्योपैथी चिकित्सा के प्रति निर्देश से।

(3) विकिरण विज्ञान, रतिज रोग विकलांग विद्या, दन्त रोग, शैशवावस्था और बालावस्था के शल्यक्रियात्मक रोग, तन्त्रिका विज्ञान, कर्ण नासा, कंठ विज्ञान और नेत्र विज्ञान।

(4) पट्टी करने और अन्य शल्य उपकरणों पर लेक्चर-प्रदर्शन।

टिप्पण :

(1) शिक्षक को चाहिए कि वह अध्ययन काल के दौरान विद्यार्थी का ध्यान उसके निरोधक पक्ष की महत्ता की ओर ही आकर्षित करे।

(2) चिकित्साशास्त्र की इन शाखाओं के शिक्षण का उद्देश्य इस बाबत पर्याप्त ज्ञान कराना हो कि विद्यार्थी सामान्य स्थितियों, उनकी पहचान और होम्योपैथिक उपचार से भली प्रकार परिचित हो जाए।

(3) प्रत्येक विद्यार्थी 20 पूर्ण रोगीवृत्त तैयार करके प्रस्तुत करेगा।

शल्यचिकित्सा के लिखित प्रश्नपत्र निम्न लिखित रूप में विभाजित किए जाएंगे, अर्थात् :—

प्रसूति विज्ञान, स्त्रीरोग विज्ञान और शिशु स्वास्थ्य तथा होम्योपैथी चिकित्सा शास्त्र

होम्योपैथी का इन विषयों की बाबत वही दृष्टिकोण है जो उसका औषधि और शल्यक्रिया के संबंध में है, किन्तु प्रसूति विज्ञान और स्त्रीरोग विज्ञान के अध्ययन के दौरान होम्योपैथी चिकित्सक को, स्थानिक परिस्थितियों का निदान करने या जहाँ जीनवरक्षी उपाय के रूप में या यान्त्रिक रुकावट को दूर करने के लिए शल्यक्रिया करना आवश्यक हो वहाँ विशिष्ट नैदानिक अन्वेषण पद्धति समझने का प्रयत्न किया जाए।

स्त्री की वंशानुगत विकृति दूर करने या ऐसे वंशानुगत विकृत गर्भ को शुद्ध करने के लिए सर्वोत्तम उपयुक्त समय, गर्भकाल ही है और इस बात पर विशिष्टतः जोर दिया जाना चाहिए।

विद्यार्थियों को नवजात शिशु की बाबत भी शिक्षित किया जाना चाहिए। यह तथ्य, कि माता और बालक एक ही जैविक इकाई हैं और यह विभिन्न निकटवर्ती क्रियात्मक संबंध बालकाल के प्रथम दो वर्ष तक विद्यमान रहता है, भली प्रकार समझाया जाना चाहिए।

(क) प्रसूति विज्ञान और स्त्रीरोग विज्ञान तथा शिशु स्वास्थ्य, जिसमें गर्भकाल की अनुप्रायुक्त शरीर रचना और क्रिया तथा प्रसव सम्मिलित है, के सिद्धांतों और पद्धति का क्रमबद्ध अनुदेशन।

(ख) होम्योपैथी चिकित्सा और नुस्खे लिखना।

(ग) सुविधा की दृष्टि से यह सुझाव है कि प्रसूति विज्ञान और स्त्रीरोग विज्ञान में वैज्ञानिक पाठ्यक्रम के दौरान निम्नलिखित रीति में शिक्षित किया जाना चाहिए अर्थात् :—

प्रसूति विज्ञान : अनुप्रयुक्त शरीर रचना विज्ञान, डिम्ब, गर्भ और उपांगों का विकास गर्भकाल - सामान्य और असामान्य जटिलताएं, अवसृद्ध प्रसव, अनिर्गत अपरा (रिटन्ड प्लेसेन्टा) प्रसूतकाल- सामान्य और असामान्य प्रभवोत्तर केस, संक्रमण, अन्य सामान्य विकार, गर्भस्राव, गर्भकाल की विषाक्तता, ए० पी० एच० और पी० पी० एच०, जननांगी विकार, गर्भाशयक्रिया भी असामान्यताएं। कोमलांगों की असामान्य अवस्था। संकुचित पल्विम। अवसृद्ध प्रसव। प्रसव के तीसरे प्रक्रम की जटिलताएं। जन्म नलिका की क्षति। सामान्य प्रसूत आपरेशन।

प्रश्नपत्र 2 - साधारण शल्यक्रिया

शोथ, विनिर्दिष्ट और गैर विनिर्दिष्ट (नान स्पेसिफिक) संक्रमण, रक्तपात, स्तब्धता (शाक), जलना, अल्सर और गैंग्रीन आधुर्व और फिस्ट। तन्त्रिका क्षति और रोग पेन्शी-टेन्डन और जलना, लसिका रोग, बाह्यिकांतंत्र, जिसके अन्तर्गत तिल्ली भी है। सिर और कंठ शल्य चिकित्सा, जिममें थाइराइड, वक्ष और जन्मजात विषमताएं भी हैं।

उदरीय शल्य चिकित्सा, जिसके अन्तर्गत जठर आन्त्र तन्त्र (गैस्ट्रोइन्टेस्टाइनल सिस्टम) अस्थि और संधि शल्यक्रिया स्पाइन की क्षति और रोग। अंगविकृति, वक्ष शल्यक्रिया। जननांगी-मूत्रिक शल्यक्रिया।

होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र और होम्योपैथी में शल्यक्रिया।

प्रश्न पत्र 2 - कर्ण, नासा, कंठ विज्ञान, रजित रोग, नेत्र विज्ञान, दन्तरोग। होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र और होम्योपैथी में शल्यक्रिया।

स्त्रीरोग विज्ञान : शरीर रचना और शरीरक्रिया स्त्रीरोग संबंधी परीक्षा। स्त्री जननांगों में विषमताओं का विकास, सेक्स हार्मोन, विकारयुक्त कार्य, ऋतुस्राव संबंधी विषमताएं। विस्थापन (डिसप्लेसमेंट) शोथ, व्रण होना और स्त्री जननांगी अभिघातज (ट्राउमैटिक) विक्षति। नवोत्पत्ति। सामान्य स्त्री रोग आपरेशन और विकिरण चिकित्सा, उनके परास्परिक संबंध और समस्त जीव निकाय के साथ संबंध।

(घ) नैरोग्य और स्वास्थ्य के प्रयोजन के लिए होम्योपैथी के सिद्धांतों के कुशल उपयोग के लिए उन विषयों के तत्वों के ज्ञान की महत्ता।

शिशु -स्वास्थ्य - स्तनपान-कृत्रिम पान, अपरिपक्वता की व्यवस्था, श्वासमारोध, जन्म-क्षतियों और नवजात शिशु के सामान्य विकार।

टिप्पण :—

1. अध्ययन के दौरान इस विषय पर लेक्चरों के माध्यम से विद्यार्थी का ध्यान उसके निरोधक पक्ष की ओर सदैव आकर्षित किया जाना चाहिए।

2. चिकित्सा की इस शाखा में अनुवेक्षण का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होना चाहिए कि विद्यार्थी को, सामान्य स्थितियों, उनकी पहचान और उपचार संबंधी जानकारी का पर्याप्त ज्ञान हो जाए।

3. प्रत्येक विद्यार्थी 20 पूर्ण रोगीकृत तैयार करके प्रस्तुत करेगा।

प्रसूति विज्ञान और स्त्रीरोग विज्ञान के लिखित प्रश्नपत्र निम्नलिखित रूप में विभाजित किए जाएंगे, अर्थात् :—

प्रश्नपत्र 1 — प्रसूति विज्ञान, नवजात शिशु, शिशु स्वास्थ्य और होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र।

प्रश्नपत्र 2 — स्त्रीरोग विज्ञान और होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र।

होम्योपैथी मेटीरिया मेडिका

होम्योपैथी मेटीरिया मेडिका की रचना अन्य मेटीरिया मेडिकाओं की रचना से भिन्न है। होम्योपैथी का विचार है मानव शरीर के पृथक्-पृथक् अंगों या तत्वों पर अथवा पशु-शरीर पर या उसके भिन्न-भिन्न हिस्सों पर औषधिक्रिया का अध्ययन करना, ऐसी क्रिया का जीवन प्रक्रिया पर प्रभाव के एक पक्ष का अध्ययन मात्र है। इसमें हम औषधिक्रिया का समग्र रूप में अध्ययन नहीं कर पाते हैं और परिणामतः वह रूप हमारे अध्ययन से छूट जाता है।

2. औषधि क्रिया का आवश्यक और संपूर्ण ज्ञान तभी हो सकता है जब स्वस्थ शरीर पर मात्रात्मक (क्वांटिटेटिव) सन्तान्त्रिक औषधि का प्रयोग किया जाए। इसी पद्धति से हम व्यक्ति के संपूर्ण मन और शरीर से संबंधित बिखरे हुए-आंकड़ों को समझ सकते हैं और ऐसे संपूर्ण मानव पर ही औषधि ज्ञान का प्रयोग किया जाता है।

3. होम्योपैथी मेटीरिया मेडिका में ऐसी प्रत्येक औषधि से उत्पन्न लक्षणों का कार्य प्रदर्शी (शिमैटिक) व्यवस्था क्रम वर्णित हुंता है उसमें उनके निर्वचन या अन्तर-संबंध के बारे में कोई सिद्धांत या स्पष्टीकरण नहीं दिया जाता है। प्रत्येक औषधि का संश्लेषात्मक, विश्लेषणात्मक और तुलनात्मक अध्ययन किया जाना चाहिए और उसी आधार पर होम्योपैथी का विद्यार्थी ऐसी औषधियों का पृथक्-पृथक् और समिष्ट-रूप में अध्ययन करने और उपयुक्त नुस्खा लिखने में सफल हो सकेगा।

4. सर्वप्रथम आम तौर से होने वाले रोगों पर अति सामान्य औषधियों और पालीक्रेस्टों की चर्चा की जानी चाहिए जिससे विद्यार्थी नैदानिक (क्लीनिकल) कक्षा में या आउट-डोर इयुटी पर ऐसी औषधियों के प्रयोग से भली प्रकार

परिचित हो जाए। उस की विस्तृत और गंभीरता पूर्वक व्याख्या की जानी चाहिए और इस संदर्भ में विद्यार्थियों को ऐसी औषधियों का तुलनात्मक और पारस्परिक संबंध भी स्पष्ट किया जाना चाहिए। विद्यार्थी को औषधियों के प्रभाव-क्षेत्र और सामूहिक संबंधों से पूर्णतः परिचित कराया जाना चाहिए।

कम सामान्य और असाधारण औषधियों की मात्रा रूपरेखा बताकर उनके केवल विशिष्ट गुणों और लक्षणों के स्पष्टीकरण पर ही जोर दिया जाना चाहिए। तत्पश्चात् ही असाधारण औषधियों का अध्ययन कराया जाना चाहिए।

5. ट्यूटोरियल अवश्य होने चाहिए जिससे कि एक छोटी संख्या में विद्यार्थी अध्यापक के निकट संपर्क में आ सकें और रोगों के उपचार के सम्बन्ध में मेटीरिया मेडिका के प्रयोग का अध्ययन कर सकें और उसे समझ सकें।

6. चिकित्सा शास्त्र पढ़ाते समय विद्यार्थी का ध्यान मेटीरिया मेडिका की ओर आकर्षित किया जाना चाहिए जिससे कि रोग लक्षणों को देखते ही संबंधित औषधि की प्रवृत्ति से औषधि निश्चित की जा सके। विद्यार्थियों को इस प्रकार प्रोत्साहित किया जाना चाहिए कि वे रोगों में मेटीरिया मेडिका के व्यापक स्त्रोतों का उपयोग करें विशिष्ट रोगों के लिए कुछ औषधियों मात्र को रट कर अपने ज्ञान को सीमित न करें। हैनिमन के इस दृष्टिकोण से विद्यार्थी न केवल प्रकट होने वाले रोग लक्षणों को ही उचित रूप में समझ कर रोग अवस्था में उनके रोगहृत् मूल्य को जान सकेगा अपितु औपचारिक परीक्षा सम्बन्धी उसका बोझ भी कम हो जाएगा। अन्यथा वर्तमान रख तो रोगों के प्रति एलोपैथिक दृष्टिकोण की ओर झुका हुआ है जो आर्गेजन् के सिद्धान्तों के प्रतिकूल है।

मेटीरिया मेडिका का प्रयोग आउट डोर और अस्पतालों के बाडों में मौजूद रोगियों के संदर्भ में समझाया जाना चाहिए।

तुलनात्मक मेटीरिया मेडिका और चिकित्साशास्त्र पर लेक्चरों और ट्यूटोरियलों को यथा साध्य विभिन्न विभागों में नैदानिक आयुर्विज्ञान पर होने वाले लेक्चरों के साथ संबद्ध कर दिया जाना चाहिए।

7. औषधियों के बारे में शिक्षण के लिए महाविद्यालय में हार्बेरियम शीट और अन्य निदर्श (स्पेसिमेन) विद्यार्थियों को प्रदर्शित किए जाने चाहिए। लेक्चरों को आकर्षक बनाया जाना चाहिए और पौधों तथा अन्य सामग्री के स्लाइड दर्शित करके सम्बन्धित पक्ष को स्पष्ट किया जाना चाहिए।

8. (अ) प्रारम्भिक लेक्चर : होम्योपैथी मेटीरिया मेडिका के शिक्षण में निम्नलिखित विषयों को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए अर्थात् :—

(क) होम्योपैथी मेटीरिया मेडिका का स्वरूप और प्रविषय।

(ख) होम्योपैथी मेटीरिया मेडिका के स्त्रोत।

(ग) मेटीरिया मेडिका के अध्ययन के अनेक ढंग।

(आ) औषधियों का अध्यापन निम्नलिखित शीर्षों के अधीन किया जाना चाहिए अर्थात् :—

(1) सामान्य नाम प्राकृतिक क्रम, प्राकृतिक आवास प्रयुक्त भाग तैयारी।

(2) औषधि प्रवृत्ति के स्त्रोत।

(3) विशिष्ट लक्षणों और वृत्तियों पर जोर देते हुए औषधि की लाक्षणिकी (सिमटोमैटोलाजी)

(4) औषधियों का तुलनात्मक अध्ययन।

(5) सद्गुण, विरोधी, प्रतिकारी और सुसंगत औषधियां।

(6) उपचारार्थ प्रयोग (अनप्रयुक्त मेटीरिया मेडिका)।

(इ) शरीर की बायोकोमिक चिकित्सा पद्धति के अनुसार 12 टिश्यू रेमेडीज का अध्ययन।

मेटीरिया मेडिका के लिखित प्रश्नपत्रों का विभाजन निम्नलिखित रूप में होगा, अर्थात् :—

प्रश्नपत्र 1. मेटीरिया मेडिका परिशिष्ट 1 में अधिकथित औषधियों की बाबत सामान्य प्रश्न।

प्रश्नपत्र 2. 12 टिश्यू रेमेडीज और परिशिष्ट 2 में अधिवाचित औषधियां

औषधि-पूषी

परिशिष्ट 1 और 2 में विनिर्दिष्ट औषधियों के अतिरिक्त अंतिम बी० एच० एम० एस० (श्रेणीकृत) डिग्री परीक्षा के लिए मेटीरिया मेडिका के पाठ्य विवरण में निम्नलिखित औषधियां भी सम्मिलित हैं, अर्थात् :—

बी० एच० एम० एस० पाठ्यक्रम (परिशिष्ट 1 और 2) की महत्वपूर्ण औषधियों की तुलना अन्य औषधियों से की जाएगी (औषधियों का तुलनात्मक अध्ययन) —

- | | |
|-----------------------|--------------------------|
| 1. एबिम केन | 2. एब्रिस नायग्रा |
| 3. एकासाइफा इण्डिका | 4. एक्टिया स्पाईकेटा |
| 5. एडोनिस् वर | 6. एड्रिनेलिन |
| 7. अमोनियम म्योर | 8. एनाकार्डियम |
| 9. एन्थासिनम | 10. एण्टीमोनियम आर्स |
| 11. एपोसाइनम केन | 12. आर्टिमिसिया वल्गेरिस |
| 13. एसाफोटिडा | 14. एस्टेरियस रुबेन्स |
| 15. एबेना सेटाइबा | 16. वैसीलीनियम |
| 17. बेरायटा म्योर | 18. बैलिस पर |
| 19. बेजोइक एसिड | 20. ब्लांटा ओरियन्ट |
| 21. ब्रीमियम | 22. ब्यूफो |
| 23. केलेडियम | 24. केनाबिस इण्डिका |
| 25. कार्डुस मेरियान्स | 26. सियानोथस |
| 27. सिड्रन | 28. चिनिनम आर्स |
| 29. कोलेस्टरीनम | 30. क्लीमेडिस |
| 31. कोका | 32. काफिया कडा |

33. कामिन्सोनिया केत	34. कांडिरेंगो	29. कास्टिकम	30. कैमोमिला
35. कानोसियम रब	36. क्रीटिंगस	31. सिना	32. सिक्कोना आफ
37. साइक्ले मन	38. डिसकोरिया	33. काल्विकच	34. कालोसिथ
39. डिथ्येग्रिम	40. इकुइनिटम हाईमेल	35. ड्रोसेरा	36. डल्कामारा
41. डरजिरन	42. हैलोनिथाम	37. यूफेशिया	38. फेरम मेट
43. हाइड्रोकोटाइल	44. कैली ग्राम	39. फेरम फाम	40. जेलसेमियम
45. कैलिमिया लैट	46. लैक केनाइतम	41. ग्रेफाइटोज	42. हीपर सल्फ
47. लिथियम कार्ब	48. लोबालियम इन्फलैटा	43. हैलीबोरम	44. हायोनिथामस
49. लिसिन	50. मैगनीशिया म्योर	45. इग्नेशिया	46. इपिकाक
51. मैयाड्रिनम	52. मेलिओलियम	47. कैली वाइफ्रोम	48. कैली कार्ब
53. मेफाइटिस	54. मिनिग्रेन्थिम	49. कैली म्योर	50. कैलीफास
55. मर्क्यूरियस सिनेटप	56. मर्क्यूरियम डल	51. कैली सल्फ	52. लैकेसिस
57. मर्क्यूरियस सल्फ	58. मिलोफोलियम	53. लिडम पाल	54. लाइकोपोडियम
59. नाजा	60. ओनेस्मोडियम	55. मैग्नेशिया फास	56. मर्क्यूरियम कर
61. आग्नेयिक एसिड	62. पैसीफ्लोरा	57. मर्क्यूरियस मल	58. नैट्रम म्योर
63. फाइजस्टिगमा	64. पिकरिक एसिड	59. नैट्रम फीस	60. नैट्रम सल्फ
65. रेडियम	66. रेफेनम	61. नाइट्रिक एसिड	62. नक्स बोमिका
67. रेटैनिहिया	68. रिऊम	63. फासफोरिस	64. प्लाटिना
69. सेत्राडिला	70. सेबल	65. पाडोफाइलम	66. पल्सेटिसा
71. सैनीकिउला	72. सेलेनियम	67. रसटोक्स	68. सिकैलिकर
73. स्कुइला	74. स्टिकटापल्मोनैरिस	69. सीपिया	70. शाइलेशिया
75. सल्फ्यूरिक एसिड	76. सिम्फाइटम	71. स्पार्जिया	72. सल्फर
77. सिलिजियम जैम्बो	78. टैबकम	73. थूजा औबिस०	74. वैराटम एल्ब
79. टैरेक्साकम	80. टैरेन्टुला		
81. टेरीविन्थीना	82. थेरीडियान		
83. थलास्सिया बुरसा	84. थायरोडिनम		
85. ट्रिलोयम	86. आर्टिका यूरेन्स		
87. अस्टिलागा	88. बेसीनिनम		
89. वीलेरियाना	90. वाइबर्नम ऑप्यु		
91. विका माइनम	92. वाटिंग		
93. एक्वा-रे			

परिशिष्ट 1

1. एक्टोटेनम	2. एकोनाईट नैप
3. इस्क्यूलस हिप	4. इथूजा सिनापियम
5. एलियम सेपा	6. एलो सक्क्रोट्राइना
7. एल्युमिना	8. एमोनियम कार्ब
9. एण्टीमोनियम कूड	10. एण्टीमोनियम टार्ट
11. एपिम मेलिफिका	12. अर्जेंटम मेटालिकम
13. अर्जेंटम नाइट्रिकम	14. आनिका माण्ट
15. आर्सेनिकम एल्ब	16. औरम मेट
17. एरम ट्राइ	18. बैराइटा कार्ब
19. बैलाडोना	20. बरेसिस बल्गेरिस
21. योरेक्स	23. ब्रायोनिथा एल्ब
23. कैल्केरिया कार्ब	24. कैल्केरिया फ्लोर
25. कैल्केरिया फाम	26. कैल्केरिया सल्फ
27. कैलेन्डुला	28. कार्बोवैज

181 GI/83-2

परिशिष्ट 2

1. ऐसैटिक एसिड	2. एक्टिया रेसिमोसा
3. एमारिकस मसकेगियम	4. एग्नस कैस्टस
5. एम्ब्राग्रेसिया	6. एनाकाडियम
7. आर्सेनिक आयोड	8. बिसमथ
9. बोविस्टा	10. कैक्टस ग्रेड
11. कैल्केरिया आर्स	12. कैम्फर
13. कैनाबिस सैटाइवा	14. कैन्थरिस
15. कैप्सिकम	16. कार्बोलीक एसिड
17. कार्सिनोसाइन	18. कालोफाइलम
19. चेलीडोनियम	20. साइक्यूटा विरोसा
21. काकुलस इंडिकस	22. कॉनियम
23. क्रोकस सेटाइवा	24. क्रोटेलस हारिडस
25. क्रोटन टिग	26. क्रूपम अर्स
27. क्रूपम मेटालिकम	28. डिजिटैलिस
29. यूपेटोरियम फर्फ	30. फलोेरिका एसिड
31. ग्लोनायन	32. होमोमेलिस विर
33. हाईड्रास्टिस	34. आयोडम
35. क्रियोजोटम	36. लेक कैनाइनम
37. लिलियन टिग	38. मैग्नेसिया कार्ब
39. मैग्नेसिया फाम	40. मैडोरहिनम
41. मैजरियम	42. मासकस
43. म्योरेक्स	44. म्यूरियाटिस एसिड
45. नेट्रम कार्ब	46. पेट्रोलियम

47. ओपियम	48. पेट्रोलियम
49. फासफोरिक एसिड	50. प्लम्बग
51. सोरीनम	52. पाइरोजनिम
53. रैनाक्यूल बल्क	54. रोडोडेंड्रन
55. रिउमैक्ग	56. छटा
57. सैबाइना	58. सेंबुकम
59. सैग्यूनेरिया	60. सारसापरिल्ला
61. स्पाइजीलिया	62. स्टनम मैट
63. स्टैफिसैग्रिया	64. स्ट्रामोनियम
65. सिफिलिनम	66. ट्यूबरकुलिनम
67. बैरिओलियनम	68. वैराट्रमविन
69. जिक्म मैट	

होम्योपैथी दर्शन का आर्गेनन और सिद्धान्त :

हनीमन का आर्गेनन आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कृति और एक सहिताबद्ध मौलिक रचना है। आर्गेनन के अध्ययन तथा होम्योपैथी के इतिहास और उसके संस्थापक की जीवनी से यह दर्शित होता है कि होम्योपैथी रोगी के उपचार और नैरोग्य जैसी एक महत्त्वपूर्ण मानवीय समस्या के समाधान के लिए तर्क-प्ररक्त ताकिक पद्धति के उपयोग के लिए एक साधन है। अतः तर्क के, योजक और प्ररक्त दोनों ही, मूल सिद्धान्त की पूर्ण जानकारी अत्यावश्यक है। तबनुसार आर्गेनन इस रीति से बढ़ाया जाना चाहिए कि विद्यार्थी को उस तर्क पूर्ण सिद्धान्त की जटिलताएं स्पष्ट हो जाएं जिस पर होम्योपैथी की आधारशिला रखी हुई है और जिसकी सहायता से होम्योपैथी को अपना दैनिक कार्य करने में आसानी और प्रत्येक रोगी का उपचार करने के लिए सुविधा होती है।

व्यवहारिक पक्ष को भली प्रकार समझ और याद कर लिया जाना चाहिए जिससे कि चिकित्सक के व्यवहारिक कार्य में वह मार्गदर्शक बन सके।

1. प्रारम्भिक 10 लेक्चर

विषय :

1. होम्योपैथी क्या है ?

यह चिकित्साशास्त्र का कोई विशेष स्वरूप मात्र न होकर एक पूर्ण चिकित्सा पद्धति है। इसका जीवन स्वास्थ्य रोग उपचार और नरोग्य के प्रति एक सुभिन्न दृष्टिकोण है। इसका जीवन, स्वास्थ्य रोग, उपचार और नैरोग्य के प्रति साकल्यवादी, व्यक्तिवादी और गतिशील दृष्टिकोण है। इसका पूर्णतः तर्कपूर्ण और वस्तुपरक आधार और है। दृष्टिकोण

—होम्योपैथी अनन्यतः एक वस्तुपरक और युक्तिपूर्ण चिकित्सा पद्धति है।

—अमिगम और पद्धति की दृष्टि से होम्योपैथी पूर्णतया वैज्ञानिक है।

—यह संप्रक्षिप्त तथ्यों और आंकड़ों पर तथा ऐसे संप्रक्षिप्त तथ्यों और आंकड़ों से संबद्ध अपृथक्करणीय प्ररक्त और वियोजक तर्क पर आधारित है।

2. होम्योपैथी का सभी निदानपूर्व और परानैदानिक तथा नैदानिक विषयों के प्रति सुभिन्न दृष्टिकोण है।

3. सभी परानैदानिक और निदानपूर्व विषयों के बारे प्रारम्भिक विचार। उनके पारस्परिक संबंध और समस्त प्राणिमात्र के साथ संबंध।

4. हेनीमन आर्गेनन, पांचवा और छठा संस्करण सूत्र 1 से 294 तक।

5. होम्योपैथी दर्शन (क) होम्योपैथी दर्शन पर कैट के लेक्चर (ख) होम्योपैथी दर्शन पर गहन लेक्चर और निबंध (दि जोनस आफ होम्योपैथी) (ग) आर० राबर्ट की कृति, आर्ट आफ क्योर बाई होम्योपैथी (घ) इनहम-साइन्स आफ थेरेप्युटिक्स।

6. होम्योपैथी दर्शन, पर लेक्चरों के निम्नलिखित मदों की व्याख्या की जानी चाहिए, अर्थात्:—

(i) होम्योपैथी का प्रविषय।

(ii) होम्योपैथी का तर्क।

(iii) जीवन, स्वास्थ्य, रोग और विकार

(iv) सुग्राह्यता, प्रतिक्रिया और प्रतिरक्षा।

(v) गम्भीर और चिरकालिक रोगों के होम्योपैथी सिद्धान्त का सामान्य विकृति विज्ञान।

(vi) होम्योपैथिक दर्शन।

(vii) शक्तिकरण और अत्यल्प खुराक और औषधि शक्ति।

(viii) होम्योपैथी दृष्टिकोण से रोगी की परीक्षा।

(ix) कुल लक्षणों का महत्त्व और जटिलताएं।

(x) लक्षणों का मूल्य।

(xi) होम्योपैथी रोग वृद्धि।

(xii) औषधि का प्रभाव देखने के पश्चात् पूर्वानुमान।

(xiii) द्वितीय नुस्खा।

(xiv) कठिन और ठीक न होने वाले केस—उपशमन

7. आर्गेनन की प्रस्तावना (पांचवा और छठा संस्करण)

8. होम्योपैथी चिकित्सा का इतिहास—हेनीमन के जीवनकाल के दौरान विद्यमान चिकित्सा पद्धति, हेनीमन का प्रारम्भिक जीवन विद्यमान उपचार पद्धति से उसकी हुई निराशा, विषय का मारता है “सिद्धान्त के बारे में उसकी खोज, हेनीमन के पश्चात्कालीन जीवन का इतिहास, विभिन्न देशों में होम्योपैथी का प्रवेश होम्योपैथी के प्रवर्तक और उनका योगदान।

अद्यतन होम्योपैथी का विकास ।
होम्योपैथी में वर्तमान विचारधारा ।
होम्योपैथी का अन्य चिकित्सा पद्धतियों पर प्रभाव ।

७. हैनीमन की कृति क्रोनिक डिजीजें ।

10. सैद्धान्तिक भाग पर लेक्चर (सूत्र 1-70, शीर्ष-
नुसार चर्चा) :-

- (क) चिकित्सक चाका उद्देश्य और नैरोन्य का सर्वोच्च
आदर्श सूत्र 1 और 2
- (ख) चिकित्सक का ज्ञान—सूत्र 3 और 4.
- (ग) रोगमुक्ति का ज्ञान, जिससे मार्गदर्शन होता
है—सूत्र 5 से 10
- (घ) औषधि-ज्ञान-सूत्र 10 से 21.
- (ङ) उपचार की अन्य पद्धतियों से होम्योपैथी पद्धति
का तुलनात्मक मूल्यांकन सूत्र 22 से 6४.
- (च) संक्षेप—निरोग के लिए तीन शर्तें—सूत्र 70.

ख. आर्गेनन के प्रयोगात्मक मार्गों पर लेक्चरों को
निम्नलिखित विषयों में विभाजित किया जाएगा और
बहुइन्हीं विषयों के बारे में दिए जाएंगे:—

- (क) किसी रोग को ठीक करने के लिए क्या जानना
आवश्यक है और रोगीकृत होने की पद्धति—
सूत्र 71 से 104.
- (ख) चिकित्सा की विकृतिजनक शक्ति, अर्थात्,
औषधि पूर्विग या किस प्रकार औषधि ज्ञान
प्राप्त किया जा सकता है—सूत्र 105-145.
- (ग) सही औषधि कैसे निर्णीत की जाए, सूत्र 147,
148, 149, 150, 153 और 155.
- (घ) ठीक खुराक—सूत्र, 185-87, 189-91, 196,
197, 199, 201, 202 और 203.
- (ङ) चिरकालिक रोग—सूत्र 204, 206 और 208.
- (च) मानसिक रोग—सूत्र 210—230.
- (छ) सविराम रोग—सूत्र 231, 232, 236-38,
240-242.
- (ज) भोजन, औषधि प्रयोग का क्रम और ढंग—सूत्र—
245-48, 252-53, 257, 259, 262, 263,
269-71, 273, 275, 276, 278, 280, 286
और 289-91

ग. अन्तरंग और बहिरंग दोनों विभागों के लिए नैदानिक
लेक्चर ।

होम्योपैथी दृष्टिकोण से रोगी की परीक्षा:—

- (क) रोग निर्धारण ।

- (ख) रोग व्यक्तिकरण
- (ग) लक्षण मूल्यांकन
- (घ) लक्षण श्रेणीकरण

} लक्षण मूल्य

- (ङ) औषधि का चयन, शक्ति और खुराक की पुनरावृत्ति
- (च) रोगवृद्धि या होम्योपैथी रोग वृद्धि ।
- (छ) दोषपरक निदान
- (ज) द्वितीय नुस्खा ।
- (झ) औषधि का प्रभाव देखने के बाद पूर्वानुमान ।

आर्गेनन और होम्योपैथी दर्शन के सिद्धान्तों के प्रश्न-
पत्र निम्नलिखित रूप में विभाजित किए जाएंगे, अर्थात्:—

प्रश्नपत्र 1. सूत्र 1 से 299

हैनीमन की जीवनी, ह्यूग की कृति, प्रिंसिपल्स एण्ड
प्रेक्टिस आफ होम्योपैथी ।

प्रश्नपत्र 2—आर्गेनन की प्रस्तावना, होम्योपैथी चिकित्सा
का इतिहास, चिरकालिक रोग, होम्योपैथी दर्शन.

प्रयोगात्मक परीक्षा

रोगीवृत्त लेना—एक दोषपरक (मिआसमैटिक) निदान
के साथ ।

मनोविज्ञान

सामान्य मनोविज्ञान की प्रस्तावना

- (क) विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की परिभाषा और
उसका अन्य विज्ञानों से भिन्नता ।
- (ख) मन की संकल्पना ।
- (ग) मसमार और उसका सिद्धान्त, सम्मोहन, चेतनता
की संरचना ।
- (घ) फ्रायड और उसके सिद्धान्त अचेतन की गति
लिबिडे का विकास ।
- (ङ) मनोविज्ञान की अन्य समकालीन विचार धाराएं ।
- (च) स्वस्थ और रूग्णावस्था में मन और शरीर
के बीच सम्बन्ध ।
- (छ) प्रलक्षण (पर्सैप्शन), कल्पना, विचारण और
बुद्धि ।
- (ज) संज्ञान/क्रियावृत्ति/भाववृत्ति/कोनेशन/सहजवृत्ति/
भावुकता/व्यवहार ।

परीक्षा

बी० एच० एम० एस० श्रेणीकृत डिग्री पाठ्यक्रम परीक्षा

7. परीक्षा में प्रवेश, परीक्षा की स्कीम आदि

(i) निम्नलिखित में से कोई भी शर्त पूरी करने वाले अभ्यर्थी को बी० एच० एम० एस० (श्रेणीकृत डिग्री पाठ्यक्रम) परीक्षा में प्रवेश दिया जा सकता है:—

(क) उनके पास होम्योपैथी में कोई डिप्लोमा है या उसने समतुल्य परीक्षा उत्तीर्ण की है और वह डिप्लोमा परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् कम से कम 1-1/2 वर्ष तक परीक्षा विषयों में निम्नलिखित सैद्धान्तिक और प्रयोगात्मक अनुदेशन पाठ्यक्रम में, किसी होम्योपैथिक महाविद्यालय में, उसके प्रधानाचार्य की समाधानप्रद रूप में, नियमित रूप में उपस्थित रहा है।

होम्योपैथी महाविद्यालयों के अध्यापक या किसी होम्योपैथी डिस्पेंसरी या अस्पताल में कार्य करने वाले होम्योपैथी चिकित्सक जिनके पास चार वर्ष के अध्ययन के पश्चात् प्राप्त कोई डिप्लोमा है, या जिनके पास अधिनियम की तृतीय अनुसूची में वर्णित अर्हता है और जिन्हें कम से कम तीन वर्ष का नियमित अध्यापन का या नैदानिक अनुभव है।

(ख) यदि केन्द्रीय सरकार या किसी राज्य सरकार द्वारा चलाये जाने वाले किसी होम्योपैथी महाविद्यालय में अध्यापक या किसी डिस्पेंसरी या अस्पताल में होम्योपैथी चिकित्सक नहीं हैं किन्तु चार वर्ष के अध्ययन के पश्चात् प्राप्त कोई डिप्लोमा है या अधिनियम की तृतीय अनुसूची में सम्मिलित अर्हता है और आठ वर्ष का वृत्तिक अनुभव है।

संबंधित विषयों में लेक्चरों, प्रदर्शनों और प्रयोगात्मक/सैद्धांतिक कक्षाओं की न्यूनतम संख्या निम्नलिखित होगी:—

विषय	सैद्धांतिक	प्रयोगात्मक/ट्यूटोरियल/नैदानिक कक्षाएं
1	2	3
आरंभिक लेक्चर	150 घंटे	(जिसमें प्रदर्शन और प्रयोगात्मक कक्षाएं सम्मिलित हैं)
विकृति विज्ञान	40 घंटे	20 घंटे
जीवरसायन	40 घंटे	20 घंटे
निरोधक, सामाजिक आयुर्विज्ञान, जिनमें स्वास्थ्य शिक्षा और आनुवंशिक औषधियां सम्मिलित हैं।	60 घंटे	20 घंटे
रिपर्टरी	80 घंटे	50 घंटे

1

2

3

मेटीरिया मेडिका, जिसमें औषधियों का भेषजगुण सम्मिलित है। (1 1/2 वर्ष में)

वहिरंग और अंतरंग विभागों में नैदानिक क्लर्क के रूप में 2 मास का नैदानिक प्रशिक्षण)

आर्गेनन और दर्शन 100 घंटे 75 (1 1/2 वर्ष में)

चिकित्सा व्यवसाय जिसमें होम्योपैथी चिकित्सा शास्त्र सम्मिलित है। 200 घंटे *100 घंटे (वहिरंग और अंतरंग विभागों में नैदानिक क्लर्क के रूप में नैदानिक प्रशिक्षण-2 मास)

बाल रोग	होम्यो-चिकित्सा	40	15
मानसिक रोग	चिकित्सा	40	15
चर्म रोग	शास्त्र सहित	20	15

होम्योपैथी चिकित्सा शास्त्र सहित शल्य क्रिया (1 1/2 वर्ष में) 150 (वहिरंग और अंतरंग विभागों में नैदानिक क्लर्क के रूप में नैदानिक प्रशिक्षण-2 मास)

कर्ण, नासा, कंठ	15	15
नेत्र	25	15
दांत	15	10
विकिरण विज्ञान	15	10
प्रसूति विज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान, जिसमें होम्यो चिकित्साशास्त्र और शिशु स्वास्थ्य सम्मिलित है।	100	50 (वहिरंग और अंतरंग विभागों में नैदानिक क्लर्क के रूप में नैदानिक प्रशिक्षण-2 मास)

टिप्पण: 1 1/2 वर्ष में विहित न्यूनतम घंटों की कुल संख्या पाठ्यक्रम के दौरान 2000 आती है और इन घंटों का उपयोग शिक्षण और प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिये पूर्णतः किया जाना चाहिये।

*विद्यार्थियों को होम्योपैथी व्यवसाय में जीवरसायन और विकृति विज्ञान के महत्व, भेषजीय प्रभाव और सामान्यतः प्रयुक्त आधुनिक औषधियों से होने वाले चिकित्साजन्य रोगों की जानकारी हो जाये। उन्हें साधारणतया आयुर्विज्ञान के इतिहास का और विशिष्टतः होम्योपैथी के प्रादुर्भाव का सविस्तार ज्ञान कराया जाये। साधारणतया हैनीमन का आयुर्विज्ञान के लिये योगदान:

भारत में होम्योपैथी के विकास का इतिहास तर्कविज्ञान, मनोविज्ञान और मनोरोग विज्ञान का संक्षिप्त अध्ययन तथा जी व सांख्यिकी की प्रस्तावना परिवर्तनशील समाज में

चिकित्सक की भूमिका, राष्ट्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण संबंधी आवश्यकताएं और कार्यक्रम, अनुप्रयुक्त मैटीरिया मेडिका और रोग, होम्योपैथी की विभिन्न विचारधाराएं और उनका तर्कपूर्ण मूल्यांकन, विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों में उपचार की मौलिक विचारधाराओं का तुलनात्मक अध्ययन।

महत्वपूर्ण औषधियों के औषध स्वरूपों को चित्रित करके होम्योपैथी मैटीरिया मेडिका के अध्यापन पर और होम्योपैथी दर्शन पर अधिक जोर दिया जाना चाहिये।

(2) बी०एच०एम०एस० श्रेणीकृत डिग्री परीक्षा को दो भागों में विभाजित किया जायेगा और इन दो भागों में निम्नलिखित विषय होंगे :—

भाग 1	भाग 2
(1) जीवरसायन और विकृति विज्ञान	(1) होम्योपैथी चिकित्सा शास्त्र के साथ आयुर्विज्ञान में व्यवसाय
(2) निरोधक और सामाजिक आयुर्विज्ञान (जिसमें स्वास्थ्य शिक्षा और आनुवंशिक आयुर्विज्ञान सम्मिलित है)	(2) शल्यक्रिया तथा होम्योपैथी चिकित्सा शास्त्र
(3) रिपोर्टरी	(3) प्रसूति विज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान तथा होम्योपैथी चिकित्सा शास्त्र (4) मैटीरिया मेडिका (5) आर्गेनन, होम्योपैथी दर्शन

(3) भाग 1 की परीक्षा छह मास की समाप्ति पर और भाग 2 की परीक्षा अठारह मास की समाप्ति पर ली जायेगी किन्तु विद्यार्थी को विकल्प होगा कि वह अठारह मास के पश्चात् दोनों भागों की परीक्षा एक साथ दे दे।

(4) परीक्षा में इसमें आगे बताए गये रूप में लिखित, मौखिक प्रयोगात्मक और/या नैदानिक परीक्षाएं सम्मिलित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र के लिये तीन घंटे दिये जायेंगे।

भाग 1

(क) जीवरसायन और विकृति विज्ञान की परीक्षा में, एक सैद्धांतिक, एक प्रयोगात्मक और एक मौखिक परीक्षा होगी।

(ख) निरोधक और सामाजिक आयुर्विज्ञान में, जिसमें स्वास्थ्य शिक्षा और परिवार कल्याण सम्मिलित है एक सैद्धांतिक, एक मौखिक और एक प्रयोगात्मक परीक्षा होगी। ये परीक्षाएं प्रदर्शनों की स्पाटिंग और पहचान के बारे में होगी।

(ग) रिपोर्टरी की परीक्षा में एक सैद्धांतिक, एक मौखिक और एक प्रयोगात्मक परीक्षा होगी। ये परीक्षाएं रोगीवृत्त लेने, लक्षण विश्लेषण और मूल्यांकन तथा उपचार मार्ग निश्चित करने के संबंध में होगी।

भाग 2

(क) आयुर्विज्ञान की परीक्षा में, दो सैद्धांतिक प्रश्नपत्र एक मौखिक प्रश्नपत्र और रोगीवृत्त लेने के संबंध में एक प्रयोगात्मक प्रश्नपत्र होगा, जिससे कि होम्योपैथी के दृष्टिकोण से रोगवर्गीकरण और चिकित्सा संबंधी निदान किया जा सके। इसके लिए आधे घंटे का समय दिया जाएगा।

(ख) शल्य क्रिया की परीक्षा में, एक सैद्धांतिक प्रश्नपत्र, एक मौखिक प्रश्नपत्र और एक नैदानिक प्रश्नपत्र होगा। प्रत्येक विद्यार्थी को अपने रोगों की परीक्षा करने और उसकी रिपोर्ट देने के लिए अधिक से अधिक एक घंटे का समय दिया जा सकता है। किसी विशिष्ट रोगी की दशा में शल्यक्रिया संबंधी उपचार की आवश्यकता के साथ होम्योपैथी चिकित्सा-शास्त्र के विस्तार के प्रति विशिष्ट निर्देश दिया जाएगा।

(ग) एक प्रयोगात्मक परीक्षा होगी जिसमें शल्य क्रिया में प्रयुक्त उपकरणों, माधितों और एक्स-रे फिल्मों पर प्रश्न पूछे जाएंगे।

(घ) प्रसूति विज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान तथा शिशु स्वास्थ्य की परीक्षा में, एक सैद्धांतिक प्रश्नपत्र और एक मौखिक प्रश्नपत्र होगा, जिसमें विकृति विज्ञान संबंधी प्रदर्शनों, माडलों और एक्स-रे फिल्मों पर प्रश्न पूछे जाएंगे। एक नैदानिक परीक्षा भी होगी। विद्यार्थी को प्रसूति विज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान संबंधी अपने रोगों की परीक्षा करने और उसकी रिपोर्ट देने के लिए अधिक से अधिक आधे घंटे का समय दिया जाएगा। यह परीक्षा होम्योपैथी दृष्टिकोण से चिकित्सीय निदान के प्रति विशिष्ट निर्देश में ली जाएगी।

(ङ) मेटीरिया मेडिका की परीक्षा में निम्नलिखित प्रश्न पत्र होंगे, अर्थात् :—

(1) दो सैद्धांतिक प्रश्नपत्र। प्रत्येक प्रश्नपत्र में।

(i) होम्योपैथी मेटीरिया मेडिका के सिद्धांतों,

(ii) अन्य चिकित्सा पद्धतियों की तुलना में होम्योपैथी मेटीरिया मेडिका की विशिष्टताओं,

(iii) लक्षण श्रोतों,

(iv) औषधियों आदि के विभिन्न गतिशील संबंधों, और

(v) विकृति विज्ञान और अन्य विषयों के साथ मेटीरिया मेडिका के संबंध, के बारे में एक प्रश्न अनिवार्य होगा।

(2) एक मौखिक परीक्षा, और

(3) शय्यागत प्रयोगात्मक परीक्षा। समय—एक घंटा।

(v) आर्गेनन की परीक्षा में (क) दो सैद्धांतिक प्रश्नपत्र होंगे (ख) एक मौखिक परीक्षा होगी और (ग) एक शय्यागत प्रयोगात्मक परीक्षा होगी, जिसमें रोगीवृत्त लेने, लक्षण मूल्यांकन और उपचारक्रम निश्चित करने के लिए आर्गेनन के सिद्धांतों का प्रयोग किया जाएगा

(vi) बी०एच०एम०एस० श्रेणीकृत डिग्री परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए विद्यार्थी को भाग 1 और भाग 2 परीक्षाएं उत्तीर्ण करनी होंगी।

(vii) होम्योपैथी और अन्य संबद्ध विषयों में उत्तीर्ण होने के लिए अपेक्षित अंक प्रत्येक भाग में (लिखित मौखिक और प्रयोगात्मक) 50% है।

(viii) जिस विद्यार्थी को सभी विषयों के कुल अंकों में से 75% या अधिक अंक मिलेंगे उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने विशेष योग्यता (आनर) के साथ परीक्षा उत्तीर्ण की है परन्तु यह तब जब उसने परीक्षा एक बार में ही उत्तीर्ण कर ली हो।

(ix) प्रत्येक विषय के लिए पूर्ण अंक तथा उत्तीर्ण होने के लिए न्यूनतम अंक निम्नलिखित होंगे :—

विषय	लिखित परीक्षा		मौखिक परीक्षा		प्रयोगात्मक परीक्षा		योग	
	पूर्ण अंक	उत्तीर्ण अंक	पूर्ण अंक	उत्तीर्ण अंक	पूर्ण अंक	उत्तीर्ण अंक	पूर्ण अंक	उत्तीर्ण अंक
प्रश्न पत्र 2								
जीवरसायन और विकृति विज्ञान	100	50	50	25	50	25	200	100
निरोधक और सामाजिक आयुर्विज्ञान जिसमें स्वास्थ्य, शिक्षा और परिवार कल्याण भी है।	100	50	50	25	50	25	200	100
रिपोर्टरी	100	50	50	25	50	25	200	100
प्रश्न पत्र 2								
चिकित्सा व्यवसाय	200	100	100	50	100	50	400	200
शल्यक्रिया	100	50	50	25	50	25	200	100
प्रसूति विज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान	100	50	50	25	50	25	200	100
मेटिरिया मेडिका	200	100	50	25	50	25	300	150
आर्गेनिन और होम्यो० दर्शन	200	100	50	25	50	25	300	150

8. परीक्षाफल और पुनः प्रवेश : (i) परीक्षा में प्रवेश के लिए प्रत्येक विद्यार्थी, परीक्षा प्रारम्भ की तारीख से कम से कम 21 दिन पूर्व, संबंधित प्राधिकारी को, परीक्षा फीस सहित विहित प्ररूप में अपना आवेदन पत्र भेजेगा।

(ii) परीक्षा प्राधिकारी परीक्षा के पश्चात् यथासम्भव शीघ्र सफल विद्यार्थियों की निम्नलिखित रूप में व्यवस्थित एक सूची प्रकाशित करेगा, अर्थात् :—

(क) प्राप्त योग्यता के अनुसार प्रथम दस विद्यार्थियों के नाम और रोल नम्बर; और

(ख) अन्य विद्यार्थियों के क्रमवद्ध रोल नम्बर।

(iii) प्रत्येक विद्यार्थी का, परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने पर, संबंधित प्राधिकारी द्वारा विहित प्ररूप में एक प्रमाणपत्र दिया जाएगा।

(iv) यदि कोई विद्यार्थी परीक्षा में बैठता है किन्तु किसी विषय या विषयों में अनुत्तीर्ण हो जाता है तो उसे प्रथम परीक्षाफल के प्रकाशन की तारीख से छह सप्ताह के पश्चात् उस विषय या विषयों में, जिनमें वह उत्तीर्ण नहीं हो पाया है, अनुपूरक परीक्षा देने की अनुज्ञा दी जा सकती है। इसके लिए उसे विहित परीक्षा फीस और प्ररूप में आवेदन पत्र देना होगा।

(v) यदि अनुपूरक या पश्चात्वर्ती परीक्षा में विद्यार्थी उस विषय या विषयों में उत्तीर्ण अंक (पास मार्क्स) प्राप्त कर लेता है तो उसे सम्पूर्ण परीक्षा में उत्तीर्ण घोषित कर दिया जाएगा।

(vi) यदि वह संबंधित विषय या विषयों में ऐसी अनुपूरक परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो पाता है तो वह आगामी वार्षिक परीक्षा में उस विषय या उन विषयों में पुनः बैठ सकता है, किन्तु यह तब जब वह इस भाव का प्रमाणपत्र (विनिर्धनों के अधीन अपेक्षित प्रमाणपत्र के अलावा) प्रस्तुत करे कि उसने अनुत्तीर्ण हुए विषय या विषयों में आगामी शैक्षिक वर्ष के दौरान अतिरिक्त अध्ययन पाठ्यक्रम प्रधानाचार्य को समाधानप्रद रूप में, पूरा कर लिया है : परन्तु शर्त यह है कि परीक्षा के सभी भाग, उस तारीख से जिसको सम्पूर्ण परीक्षा पहली बार प्रवृत्त हुई थी, चार बार में (अनुपूरक सहित) उत्तीर्ण कर लिए जाएं।

(vii) यदि कोई विद्यार्थी विहित चार बार में सभी विषयों में उत्तीर्ण नहीं हो पाता है तो उसे महाविद्यालय के प्रधान को संतोषप्रद रूप में सभी भागों के सभी विषयों में एक वर्ष का अतिरिक्त अध्ययन पाठ्यक्रम पूरा करना होगा तथा सभी विषयों की परीक्षा देनी होगी।

परन्तु बी०एच०एम०एस० परीक्षा भाग-2 में बैठने वाले विद्यार्थी को विहित बारी के अंश में केवल एक विषय ही उस्तार्ण करना हो तो उसे उस विशिष्ट विषय में आगामी परीक्षा में बैठने की अनुज्ञा दे दी जाएगी और उसे यह परीक्षा इस विशेष बारी में पूर्ण करनी होगी।

(viii) साधारणतया सभी परीक्षाएं ऐसी तारीखों को, स्थानों और समयों पर की जाएंगी जो परीक्षा प्राधिकारी निश्चित करें।

(ix) परीक्षा प्राधिकारी असाधारण परिस्थितियों में अपने द्वारा ली गई किसी भी परीक्षा को पूर्णतः या भागत, रद्द कर सकता है, किन्तु यह तब जब वह इसकी सूचना होम्योपैथी केन्द्रीय परिषद को दे दे और उन विषयों में पुनः परीक्षा की व्यवस्था ऐसे रद्दकरण की तारीख से तीस दिन के भीतर कर दे।

9. परीक्षक: (1) ऐसे किसी व्यक्ति को जिसके पास चार वर्ष के अध्ययन के पश्चात् प्राप्त होम्योपैथी में डिप्लोमा या कोई डिग्री नहीं है अथवा ऐसे व्यक्ति को, जिसके पास तृतीय अनुसूची में उल्लिखित अर्हताएं नहीं हैं किसी भी बी०एच०एम०एस० (श्रेणीकृत डिग्री) पाठ्यक्रम की वृत्तिक परीक्षा के संचालन के लिए आंतरिक या बाह्य परीक्षक के रूप में या प्रश्नपत्र सेटर के रूप में नियुक्त नहीं किया जाएगा:

परन्तु—

- (क) किसी भी व्यक्ति को आंतरिक परीक्षक के रूप में नियुक्त नहीं किया जाएगा यदि उसे संबंधित विषय में तीन वर्ष का अध्यापन अनुभव नहीं है,
- (ख) आन्तरिक परीक्षक के रूप में ऐसे व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया जाएगा जो डिग्री स्तर की किसी संस्था में संबंधित विषय का उपाचार्य (रीडर) सहायक आचार्य (प्रोफेसर) की पंक्ति में नीचे का है।
- (ग) किसी भी व्यक्ति को किसी भी संबद्ध चिकित्सा विषय के बाह्य परीक्षक के रूप में नियुक्त नहीं किया जाएगा यदि उसके पास होम्योपैथी (शिक्षा का न्यूनतम मानक) विनियम, 1980 के उपाबंध 'ड' के अनुसार किसी शिक्षक पद पर नियुक्त के लिए तथा अपेक्षित मान्यता प्राप्त चिकित्सीय अर्हता नहीं है।
- (घ) बाह्य परीक्षक केवल होम्योपैथी महाविद्यालयों और आधुनिक आयुर्विज्ञान महाविद्यालयों के शिक्षकों में से ही लिए जाएंगे।
- (ङ) बाह्य परीक्षकों में से कम से कम एक तिहाई बाह्य परीक्षक होम्योपैथी या आधुनिक औषधियों में चिकित्सा वृत्ति करने वाले ऐसे चिकित्सकों में

से लिए जाएंगे, जो परीक्षा प्राधिकारी की राय में स्यातिमान चिकित्सक हैं और जिन्होंने भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद अधिनियम, 1956 के अधीन मान्यता प्राप्त कोई होम्योपैथी अर्हता या आयुर्विज्ञान अर्हता प्राप्त कर ली है।

(च) जो व्यक्ति सरकारी नियोजन में है उन्हें भी बाह्य परीक्षकों के रूप में नियुक्ति के लिए विचार में लिया जा सकता है परन्तु यह तब जब उनके पास ऊपर उप-विनियम (ङ) में विनिर्दिष्ट आयुर्विज्ञान अर्हता हो।

(छ) किसी प्रश्नपत्र सेटर को आन्तरिक या बाह्य परीक्षक के रूप में नियुक्त किया जा सकता है।

(ii) प्रश्नपत्रों के परिनियामन (माडरेशन) के लिए परीक्षा प्राधिकारी एक या तीन से अधिक परिनियामक नियुक्त कर सकता है।

(iii) मौखिक और प्रयोगात्मक परीक्षाएं संबंधित आन्तरिक और बाह्य परीक्षक पारस्परिक सहयोग से लेंगे। उनमें से प्रत्येक को, पूर्ण अंकों में से 50 प्रतिशत तक अंक देने का हक होगा तथा वे परीक्षा में बैठने वाले विद्यार्थियों को, परीक्षा में साबित हुई योग्यता के अनुसार इन्हीं अंकों में से अंक आबंटित करेंगे। इस प्रकार तैयार की गई अंक तालिका पर दोनों परीक्षक हस्ताक्षर करेंगे। प्रत्येक परीक्षक को अलग से तैयार की गई हस्ताक्षरित अंक तालिका परीक्षा प्राधिकारी को अलग से भेजने का हक होगा। परीक्षा प्राधिकारी इस प्रकार भेजी गई अंक-तालिकाओं पर विचार करेगा किन्तु उसे परीक्षाफल को घोषणा इन अंक तालिकाओं के आधार पर ही करनी होगी।

(iv) प्रत्येक होम्योपैथी महाविद्यालय, परीक्षाओं के संचालन के लिए आन्तरिक और बाह्य दोनों परीक्षकों को सभी सुविधाएं देगा और आन्तरिक परीक्षक, परीक्षाएं ली जाने के लिए सभी तैयारी करेगा।

(v) बाह्य परीक्षक को यह हक होगा कि वह परीक्षा प्राधिकारी को, होम्योपैथी महाविद्यालय द्वारा दी गई सुविधाओं में एसी कमियां या त्रुटियों को सूचित करे जो उसने देखी हों या जो उसके मतानुसार विद्यमान थीं।

(vi) वह अपनी उक्त सूचना की एक प्रति केन्द्रीय परिषद को भी, ऐसी कार्यवाही की जाने के लिए भेजेगा जैसी केन्द्रीय परिषद ठीक समझे।

पी०एल० वर्मा, सचिव

CENTRAL COUNCIL OF HOMOEOPATHY

NOTIFICATION

New Delhi, the 11th May, 1983

No. 7-1/83/CCH.—In exercise of the powers conferred by clauses (i), (j) and (k) of section 33 and

sub-section (1) of section 20 of the Homoeopathy Central Council Act, 1973 (59 of 1973), the Central Council of Homoeopathy, with the previous sanction of the Central Government hereby makes the following regulations, namely :—

PART I

PRELIMINARY

1. Short title and commencement.—(1) These regulations may be called the Homoeopathy (Graded Degree Course) Regulations, 1983.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Gazette of India.

(2) Definitions.—In these regulations, unless the context otherwise requires.

- (i) "Act" means the Homoeopathy Central Council Act, 1973 (59 of 1973) ;
- (ii) "Courses" means the Courses of study in Homoeopathy, namely :—
 - (a) D.H.M.S. (Diploma in Homoeopathic Medicine and Surgery) ; and
 - (b) B.H.M.S. (Bachelor of Homoeopathic Medicine and Surgery) ;
- (iii) "Diploma" means a Diploma in Homoeopathy as defined in clause (iii) of regulations 2 of the Homoeopathy (Diploma Course) Regulation, 1983.
- (iv) "Degree" means a Degree in Homoeopathy as provided in regulation 3 of these regulations or a Degree as defined in clause (iv) of regulation 2 of the Homoeopathy (Degree Course) Regulations, 1983.
- (v) "Homoeopathic College" means a Homoeopathic Medical College affiliated to a Board or University and recognised by the Central Council ;
- (vi) "Inspector" means an Medical Inspector appointed under sub-section (1) of section 17 of the Act ;
- (vii) "President" means the President of the Central Council ;
- (viii) "Second Schedule" and "Third Schedule" means the Second Schedule and Third Schedule respectively of the Act ;
- (ix) "Syllabus" and "Curriculum" mean the Syllabus and Curriculum for different courses of study as specified by the Central Council under these regulations, the Homoeopathy (Diploma Course) Regulations, 1983 and the Homoeopathy (Degree Course) Regulations, 1983.
- (x) "Teaching experience" means teaching experience in the subject concerned in a Homoeopathic College or in a Hospital recognised by the Central Council ;
- (xi) "Visitor" means a Visitor appointed under sub-section (1) of section 18 of the Act.

PART II

COURSE OF STUDY

3. Graded Degree Course.—(i) The Degree Course of B.H.M.S. (Graded Degree) shall comprise a course of study consisting of the Curriculum and Syllabus provided in these regulations, spread over a period of two years including Compulsory Internship of six months' duration after passing the final Degree examination ;

(ii) The Internship shall be undertaken at the Hospital attached to the Homoeopathic College and in cases where such Hospital cannot accommodate all of its students for Internship such students may undertake Internship in a Homoeopathic Hospital or Dispensary run by the Central Government or State Government or local bodies ;

(iii) At the completion of the Internship of the specified period and on the recommendation of the head of the institution where Internship was undertaken, the concerned Board or University, as the case may be shall issue the Degree to the successful candidate ;

PART III

ADMISSION TO COURSE

4. Minimum qualification.—No candidate shall be admitted to the B.H.M.S. Graded Degree Course unless he has passed the final examination of a Diploma Course in Homoeopathy of not less than four years' duration.

PART IV

THE CURRICULUM

5. Subjects.—Subjects for study and examination of the B.H.M.S. (Graded Degree) Course shall be as under :—

- (i) Pathology, bacteriology and parasitology ;
- (ii) Biochemistry ;
- (iii) Practice of medicine and paediatrics ;
- (iv) Fundamentals of psychology and logic ;
- (v) Obstetrics and gynaecology ;
- (vi) Surgery including E.N.T. including ophthalmology ;
- (vii) Organon of medicine ;
- (viii) Chronic diseases and homoeopathic philosophy ;
- (ix) Case-taking and homoeopathic repertorisation ;
- (x) Homoeopathic Materia Medica ;
- (xi) Social and preventive medicine including health education and family medicine ;
- (xii) Homoeopathic therapeutics ; and
- (xiii) History of medicine ;

PART V

SYLLABUS

6. Syllabus for Graded Degree Course.—Following shall be the syllabus for the B.H.M.S. (Graded Degree) Course :—

BIOCHEMISTRY AND PATHOLOGY

(Including Bacteriology and Parasitology)

(1) The teaching of pathology and biochemistry has to be done very cautiously and judiciously, while allopathy associates the pathology of tissues and biochemistry with diseased conditions and considers bacteria a conditioned causes of diseases, homoeopathy regards disease as purely a dynamic disturbance of the vital force expressed as altered sensations and functions which may or may not ultimate in gross tissue changes. The tissue changes are not therefore an essential part of the disease per se and are not accordingly in homoeopathy the object of treatment by medication.

Since the discoveries of Louis Pasteur and Robert Koch the medical word has come to believe in the simple dogma "Kill the germs and cure the disease". But subsequent experience has revealed that there is an elusive factor called 'susceptibility' of the patient which is behind infection and actual outbreak of disease. As homoeopathy is mainly concerned with reactions of the human organism to different morbid factors, microbial or otherwise, the role of bacteria or viruses in the production of disease is therefore in homoeopathy quite secondary.

(3) Knowledge of biochemistry is nevertheless necessary for a complete homoeopathic physician, but it is for purposes other than therapeutics such as for diagnosis, prognosis, prevention of disease and general management. Similarly knowledge of pathology is necessary for disease determination prognosis, for discrimination between symptoms of the patient and symptoms of the disease and for adjusting the dose and potency of indicated homoeopathic remedy.

(4) Only broad basic training in pathology, free from specialist bias, should however be imparted to students. Teachers of pathology should never lose sight of the fact that they are training medical practitioners, especially homoeopathic practitioners, and not technicians and specialist in pathology. The living patient, and not the corpse, should be the central theme in the teaching of this subject.

(5) The purpose of the instruction in pathology is to enable the student to correlate subjective symptoms with the objective ones, to interpret clinical symptoms and their inter-relationship of the basis of underlying pathology.

(a) Biochemistry (Physiology)

Hormones (in greater details than in D.H.M.S. course).

Chemistry of respiration—acid base balance. Enzymes.

Neurochemistry including special metabolism of nervous system.

Energy metabolism.

Suitable demonstrations to be shown to the students.

Clinical examination of nervous system of man.

Neurological case demonstration.

Renal function tests.

Liver function tests.

Analysis of blood for N.P.N., chloride, glucose, serum proteins.

(b) Microbiology (systematic bacteriology)

Corynebacteria and Pfeifferella.

Rickettsiae and viruses (rickettsiae instruction of virology and Trichagents). Parvobacteria (Brucella, Haemophilus, borrelia, pasteuralla, spirochaetes, sporozoa and toxoplasma.

Haemoflagellates.

Cestodes, nematodes.

(c) Pathology of special organs.

(d) Morbid anatomy (Microscopic) in common disorders.

(e) Lecture and/or demonstration—clinical and chemical pathology.

Clinical and chemical pathology.

Blood—Collection for different purposes. Estimation of haemoglobin total count of R.B.Cs. platelets, M.C.H. M.C.V., M.C.H.C., significance, differential leucocyte count. Malaria-parasites, leishmania, trypanosomes in peripheral blood, marrow or spleen puncture material. Development of R.B.C. and W.B.C., Leukaemia. Erythrocyte sedimentation rate, blood culture. Aldehyde and chopra's test. Bleeding and coagulation time. Prothrombin time. Blood groups, Estimation of blood sugar. Sugar tolerance test. Liver function tests, specially bilirubin, Vandenberg's reaction, icterus index, fractional meal test.

Urine—Estimation of urea, urea clearance test, water diuretic, urinary deposits, faeces, different over-differentiation bacillary dysentery. Amoebic dysentery. Examination of throat swab, sputum, C.S.F. ascitis and pleural fluids.

PRACTICAL

Laboratory diagnosis of upper and lower respiratory tract infections. Laboratory diagnosis of diarrhoea and dysentery disorders. Laboratory diagnosis of pyogenic conditions, serological tests. Prophylactic measures, study of their side effects and management with homoeopathic medicines.

PREVENTIVE AND SOCIAL MEDICINE AND FAMILY WELFARE

This subject is of utmost importance, and throughout the period of medical studies the attention of the student should be directed to the importance of preventive medicine and the measures for the promotion of positive health.

His function is not limited merely to prescribing homoeopathic medicines for curative purposes but he has a wider role to play in the community. He has to be well conversant with the national health problems

both of rural as well as urban areas so that he can be assigned responsibilities to play an effective role not only in the field of curative but also of preventive and social medicine including family welfare.

1. Introductory lectures—review of country's health problems and their solution (Ref: Friend of Health Hahnemann's Lesser writings).
2. Industrial Hygiene :
 - (a) Health, Safety and welfare of industrial workers, Industrial hazards.
 - (b) Occupational diseases.
3. Medical statistics :

Principles and elements of statistics—vital statistics.
4. Preventive medicine : (a) General principles and Common communicable diseases, greater details may be given in the demonstrations—lectures regarding the matter covered in Diploma Course ; and (b) Natural history of disease.
5. Environmental sanitation—greater details may be given than in the diploma course.
 - (i) Insects—Insecticides and disinfection—Insects in relation to disease. Insect control.
 - (ii) Protozoal and helminthic diseases—life cycles of protozoa & Helminths—their prevention.
6. Maternal and Child Health, school health services, health education, Mental hygiene—Elementary principles, Social medicine—its aim and methods.
7. Family welfare—Demography, channels of communications, National Family Planning Programme, knowledge regarding contraceptive practices, population growth and control.
8. Eugenics (Principles, mechanism of heredity, transmission, heredity and health, public health and heredity and diseases).
9. Public health administration and international health relation.

N.B.—Field demonstration—water purification plant, infectious diseases hospitals, institution for mentally defective, health centres etc.

HOMOEOPATHIC REPERTORY

Homoeopathic materia medica in an encyclopedia of symptoms. No mind can memorise all the symptoms of all the drugs together with their characteristic gradation. The repertory is an index, a catalogue of the symptoms of the materia medica, neatly arranged in a practical form, and also indicating the relative gradation of drugs, and it greatly facilitates quick selection of the indicated remedy. It is impossible to practice homoeopathy without the aid of repertories, and the best repertory is the fullest.

It is possible to obtain the needed correspondence between drugs and disease conditions in a variety of ways and degrees, and there are therefore different types of repertories, each with its own distinctive advantages in finding the similimum.

Case Taking :

Difficulties of taking a chronic case. Recording of cases and usefulness of record keeping.

Totality of symptoms, Prescribing symptoms ; uncommon, peculiar and characteristic symptoms ; general and particular symptoms, eliminating symptoms and analysis of the case, uncommon and common symptoms ; gradation and evaluation of symptoms ; importance of mental symptoms ; kinds and sources of general symptoms.

1. History of Repertories.
2. Types of Repertories.
3. Demonstration of 3 cases worked on Boenninghausen.
4. Kent's repertory—advanced Study with case demonstration.
5. Bogers Boenninghausen repertory—his contribution to repertory.
6. Card repertory with demonstration of 5 cases, limitations and advantages of Card repertories, Theoretical lectures with demonstrations.

PRACTICAL

Students are to repertorise :

- (i) 15 short cases on Kent.
- (ii) 10 chronic (long cases on Kent).
- (iii) 5 cases to be crossed checked.

MEDICINE INCLUDING HOMOEOPATHIC THERAPEUTICS

Homoeopathy has a distinct approach to disease. It recognises disease neither by its prominent symptoms nor by those of any organ or part of the body. It treats the patient as a whole and the totality of the symptoms exhibited by him represents his disease. Merely the name of the condition from which he suffers most is thus of no significance to a homoeopath.

The basic principle of homoeopathy that it treats the patient and not his disease should be constantly impressed in the minds of the students, and it is only when this approach is firmly inculcated in them that they will be true homoeopaths.

Medicine is essentially a practical science and can be more learnt at the bed-side than in a class room. Care should therefore be taken to impart an intensive clinical training to the students during the latter part of their studies in the college.

- A. A course of systematic instructions in the principles and practice of Medicine—(Beyond what is covered in the diploma

course—greater details may be given in the demonstration—lectures regarding the matter covered in the Diploma Course).

- B. During the first three months of the clinical period when the students will not be in charge of beds they will be given instructions on elementary methods of clinical examination, including physical signs, the use of common instruments like Stethoscope, Ophthalmoscope, etc.
- C. Instruction in homoeopathic therapeutics and prescribing.
- D. As a matter of convenience, it is suggested that instruction may be given in the following manner during the two years of clinical course in medicine :—

1. Applied Anatomy & Applied Physiology.
2. Disease of the different systems what is not covered in the Diploma Course and also such diseases which are more common with special reference to Homoeopathic therapeutics.
3. Psychological Medicine—relation between body and mind criteria of normality. Psychi-apparatus, personality types and traits, dreams, EEG. Mental deficiency—causes, conditions, disorders of old age, psychopathic personality, Mental diseases or organic origin—Psychosomatic conception of disorders and Homoeopathy. Psychoneurosis and Psychosis, symptomatology with special reference to homoeopathic therapeutics and Psychotherapy.
4. Dermatology common diseases of skin including leprosy with special reference to homoeopathic therapeutics.
5. Environmental and physical Agents. Effects of attitude ; effects of radiation ; effects of motion sickness ; effects of heat and cold ; effects of electric injuries ; effect of poisoning by heavy metals, drugs etc. Iatrogenic diseases.
6. In paediatrics : Emphasis will be laid on—growth and development.

Developmental factors in health and diseases, problems of the new born and premature infant Birth Order and Mental Development, behaviour problem—emotional behaviour and problems of emotional behaviour Handicapped children. Common diseases of children with homoeopathic therapeutics.

Note : (1) Throughout the whole period of study, attention of the students should be directed by the teachers of this subject on the importance of preventive aspects of these conditions.

(2) Instruction in these branches of medicine should be directed to the attainment of sufficient knowledge to ensure familiarity with the common conditions, their recognition and treatment.

(3) Every student shall prepare and submit 20 complete case histories.

The written papers in Medicine shall be distributed as follows :—

Paper I.—Infectious diseases. Disorders of endocrine system, diseases of metabolism and deficiency diseases. Diseases of the digestive system and peritoneum. Diseases of blood, spleen and lymph glands, and tropical diseases. Homoeopathic therapeutics.

Paper II.—Diseases of Locomotor system, diseases of cardiovascular system, diseases of urinogenital system, diseases of children, diseases of nervous system, psychological medicine, common skin diseases, Homoeopathic therapeutics.

SURGERY INCLUDING HOMOEOPATHIC THERAPEUTICS

Where medicine fails surgery begins. Affections of external parts requiring mechanical skill properly belong to surgery ; but frequently when the injury is so extensive or violent as to evoke dynamic reaction in the organism, dynamic treatment with remedies is necessary.

Surgery removes the end products of diseases ; but pre and post operative treatment is essential to correct the basic dyscrasia and prevent sequelae or complication.

A large number of conditions being amenable to internal medication in homoeopathy, the scope of the latter is much wider than that of surgery is to that extent limited. But as supplement to medicine, surgery has a definite place in homoeopathy and should be taught accordingly.

- A. A course of systematic instruction in the principles of Surgery.
- B. During the initial months of the clinical training when the student will not be given charge of beds, they will be given instructions of fundamentals of clinical examination, including physical signs, the use of common instruments, aspsis and antisepsis dressing of wounds etc.
- C. Practical instructions in surgical methods including physio-therapy.
- D. Practical instruction in minor operative surgery on the living.
- E. Instruction in the following subjects :—
 - (i) Radiology and electrotherapeutics and their application to surgery.
 - (ii) Venereal diseases.
 - (iii) Orthopaedics.
 - (iv) Dental Diseases.
 - (v) Surgical diseases of infancy and childhood
 - (vi) Neurology.

(vii) Otorhinolaryngology.

(viii) Ophthalmology.

F. Instructions in Homoeopathic therapeutics and prescribing.

G. As a matter of convenience, it is suggested that instructions may be given in the following manner during clinical course in Surgery.

(i) Applied Anatomy and applied Physiology, General Surgical Procedures.

(ii) Diseases of the different systems what is not covered in the Diploma Course and also such diseases which are common with special reference to Homoeopathic Therapeutics.

(iii) Lecture demonstrations on—Radiology, Venereal diseases, orthopaedics, dental diseases, surgical diseases of infancy and childhood, Neurology, otorhinolaryngology and ophthalmology.

(iv) Lecture demonstration on bandages and other surgical appliances.

Note :

1. Throughout the whole period of study attention of the students should be directed by the teachers to the importance of its preventive aspects.

2. Instructions in these branches of medicine should be directed to the attainment of sufficient knowledge to ensure familiarity with the common conditions, their recognition and Homoeopathic treatment.

3. Every student shall prepare and submit 20 complete case histories.

The written paper in Surgery shall be distributed as follows :—

Paper I—General Surgery

Inflammation, specific and non-specific infection, haemorrhage, shock, burns, ulcer and gangrene. Tumours, and cysts. Injuries and disease of nerves, muscles tendons and burns, diseases of lymph, vascular system including spleen. Head and neck surgery including surgery of thyroid, breast and congenital anomalies.

Abdominal surgery including gastrointestinal system. Bone and joint surgery, injuries and diseases of spine.

Deformities of limbs.

Thoracic surgery.

Genito Urinary surgery.

Homoeopathic Therapeutic and scope of surgery in Homoeopathy.

Paper II—Otorhinolaryngology, venereal diseases, ophthalmology, Dental. Homoeopathic Therapeutics and scope of Surgery in Homoeopathy.

OBSTETRICS, GYNAECOLOGY AND INFANT HYGIENE INCLUDING HOMOEOPATHIC THERAPEUTICS

Homoeopathy adopts the same attitude towards these subjects as it does towards medicine and surgery. But while dealing with obstetrical and gynaecological cases, a homoeopathic physician must be trained in special clinical methods of investigation for diagnosing local conditions and discriminating cases where surgical intervention either as a life-saving measure or for removing mechanical obstacles is necessary.

The best time to eradicate familial dyscrasias in a woman or to purify the foetus of such dyscrasia which it may inherit, is during pregnancy; and this should be specially stressed.

Students should also be instructed in the case of the new-born. The fact that the mother and child form a single biological unit and that this peculiar close psychological relationship persists for at least the first two years of the child's life should be particularly emphasised.

A. A course of systematic instructions in the principles and practice of obstetrics and gynaecology and infant hygiene including the applied anatomy and physiology of pregnancy and labour.

B. Instructions in Homoeopathic Therapeutics and prescribing.

C. As a matter of convenience, it is suggested that instruction may be given in the following manner during the clinical course in Obstetrics and Gynaecology.

Obstetrics : Applied anatomy, development of the ovum, the foetus and appendages, pregnancy—normal and abnormal complications; obstructed labour, retained placenta puerperium—normal and abnormal post natal case, infection; other common disorders, abortions, toxæmia of pregnancy, A.P.H. and P.P.H. Disorders of genital tract, abnormalities in the action of the uterus. Abnormal conditions of the soft parts. Contracted pelvis. Obstructed labour. Complications of the third stage of labour. Injuries of birth canal. Common obstetrical operations.

Gynaecology : Applied anatomy and physiology, Gynaecological examination. Developmental Anomalies of the female generative organs; Sex Hormones; disordered function, menstrual anomalies. Displacements. Inflammation, ulceration and traumatic lesions of the female genital organs. New Growths, common gynaecological operations and Radio Therapy. Subjects, their mutual relations, and relation with the whole living organism.

D. Importance of learning the essentials of those subjects for efficient applications of the principles of homoeopathy for the purpose of cure and health.

Infant Hygien : Breast feeding—artificial feeding, management of prematurity, asphyxia, birth injuries and common disorders of the new born.

Note :

1. Throughout the whole period of the study, the attention of the students should be directed by the lecturers of this subject to the importance of its preventive aspects.

2. Instruction in this branch of medicine should be directed to the attainment of sufficient knowledge to ensure familiarity with common conditions, their recognition and treatment.

3. Every student shall prepare and submit 20 complete case histories.

The written paper in Obstetrics and Gynaecology shall be distributed as follows :—

Paper I—Obstetrics, new born, infant hygiene and homoeopathic therapeutics.

Paper II—Gynaecology and homoeopathic therapeutics.

HOMOEOPATHIC MATERIA MEDICA

Homoeopathic materia medica is differently constructed as compared to other materia medicas. Homoeopathy considers that study of the action of drugs on individual parts or system of the body or on animals or isolated organs is only a partial study of life processes under such action and that it does not lead us to full appreciation of the action of the medicinal agent ; the drug agent as a whole is lost sight of.

Essential and complete knowledge of the drug action as a whole can be supplied only by qualitative synoptic drug experiments on healthy persons and this alone can make it possible to view all the scattered data in relation to the psychosomatic whole of a person ; and it is just such a person as a whole to the knowledge of drug action is to be applied.

3. The homoeopathic materia medica consists of a schematic arrangement of symptoms produced by each drug, incorporating no theories or explanations about their interpretation or inter-relationship. Each drug should be studied synthetically, analytically and comparatively, and this alone would enable a homoeopathic student to study each drug individually and as a whole and help him to be a good prescriber.

4. Polychrests and the most commonly indicated drugs for every day ailments should be taken up first so that in the clinical classes or outdoor duties the students become familiar with their applications. They should be thoroughly dealt with explaining all comparisons and relationship. Students should be conversant with their sphere of action and family relationship.

The less common and rare drugs should be taught in outline, emphasizing only their most salient features and symptoms. Rarer drugs should be dealt with later.

5. Tutorials must be introduced so that students in small numbers can be in close touch with teachers and can be helped to study and understand materia medica in relation to its application in the treatment of the sick.

6. While teaching therapeutics an attempt should be made to recall the materia medica so that indications for drugs in a clinical condition can directly flow out from the provings of the drugs concerned. The student should be encouraged to apply the resources of the vast materia medica in any sickness and not limit himself to memorise a few drugs for a particular disease. This Hahnemannian approach will not only help him in understanding the proper perspective of symptoms as applied and their curative value in sickness but will even lighten his burden as far as formal examinations are concerned. Otherwise the present trend produces the allopathic approach to treatment of diseases and is contradictory to the teaching of Organon.

Application of materia medica should be demonstrated from cases in the outdoor and hospital wards.

Lectures on comparative materia medica and therapeutics as well as tutorials should as far as possible be integrated with lectures on clinical medicine in the various departments.

7. For the teaching of drugs the college should keep herbarium sheets and other specimens for demonstration to the students. Lectures should be made interesting and slides of plants and materials may be projected.

8. A. Introductory lectures : Teaching of the homoeopathic materia medica should include.

- (a) nature and scope of homoeopathic materia medica.
- (b) sources of homoeopathic materia medica, and
- (c) different ways of study the materia medica

B. The drugs are to be taught under the following heads :

- 1. Common name, natural order, habitat, part used, preparation ;
- 2. Sources of drug proving ;
- 3. Symptomatisation of the drug emphasising the characteristics, symptoms and modalities.
- 4. Comparative study of drugs ;
- 5. Complementary, inimical, antidotal and concordant remedies ;
- 6. Therapeutics application (applied materia medica).

C. A study of 12 tissue remedies according to Schussler's biochemic system of medicine.

"The written papers in *Materia Medica* should be distributed as follows :—

Paper I—General questions on *Materia Medica* and drugs as laid down in appendix I with comparative study of the additional drugs.

Paper II—Twelve Tissue Remedies and Drugs is laid down in appendix II with comparative study of the additional drugs.

LIST OF DRUGS

In addition to the list of drugs Appendix I & II, the following additional drugs are included in the syllabus of *materia medica* for the final B.H.M.S. (Graded Degree Course) examination :—

Important drugs of B.H.M.S. course (Appendix I and II) will be compared with other drugs (comparative study of drugs).

1. *Abies Can.*
2. *Abies Nigra.*
3. *Acalypha Indica.*
4. *Actaea Spicata.*
5. *Adonis Ver.*
6. *Adrenalin.*
7. *Ammonium Mur.*
8. *Anacardium O.*
9. *Anthracinum.*
10. *Antimonium Ars.*
11. *Apocynum Can.*
12. *Artemisia Vul.*
13. *Asafoetida.*
14. *Asterias Rubens.*
15. *Avena Satiya.*
16. *Bacillinum.*
17. *Baryta Mur.*
18. *Bellis Per.*
19. *Benzoic Acid.*
20. *Blatta Or.*
21. *Bromium.*
22. *Bufo R.*
23. *Caladium.*
24. *Canabis Indica.*
25. *Cardus Marianus.*
26. *Ceanothus.*
27. *Cedron.*
28. *Chininum Ars.*
29. *Cholesterinum.*
30. *Climatis.*
31. *Coca.*
32. *Coffea cruda.*
33. *Collinsonia Can.*
34. *Condurango.*
35. *Corrallium Rub.*
36. *Crataegus.*
37. *Cyclamen.*
38. *Dioscorea.*
39. *Diphtherinum.*

40. *Equisetum.*
41. *Erigeron.*
42. *Helonias.*
43. *Hydrocotyle A.*
44. *Kali Brom.*
45. *Kalmia Lat.*
46. *Lac Caninum.*
47. *Lithium Carb.*
48. *Lobalia inflata.*
49. *Lyssin.*
50. *Magnesia Mur.*
51. *Malandrinum.*
52. *Meliolotus.*
53. *Mephitis.*
54. *Menyanthes.*
55. *Mercurius Cynatus.*
56. *Mercurius Dul.*
57. *Mercurius Sulph.*
58. *Millifolium.*
59. *Naja T.*
60. *Onosmodium.*
61. *Oxalic Acid.*
62. *Passiflora.*
63. *Physiostigms.*
64. *Picric Acid.*
65. *Radium B.*
66. *Raphanus.*
67. *Ratanhia.*
68. *Rheum.*
69. *Sabadilla.*
70. *Sabal Ser.*
71. *Sanicula.*
72. *Selenium.*
73. *Squilla.*
74. *Sticta Pul.*
75. *Sulphuric Acid.*
76. *Symphytum.*
77. *Syzygium Jab.*
78. *Tabacum.*
79. *Taraxacum.*
80. *Tarentula C.*
81. *Terebinthina.*
82. *Theridion.*
83. *Thlaspia Bursa.*
84. *Thyroidinum.*
85. *Trillium P.*
86. *Urtica Urens.*
87. *Ustilago.*
88. *Vaccininam.*
89. *Valeriana.*
90. *Viburnum Op.*
91. *Vinca Minor.*
92. *Vipera.*
93. *X-ray.*

APPENDIX I

1. *Abrotanum.*

- | | |
|------------------------|--------------------|
| *2. Aconitum Nap. | 58. Mercurius Sol. |
| 3. Aesculus Hip. | 59. Natrum Mur. |
| 4. Aethusa Gyn. | 60. Natrum Phos. |
| *5. Allium Cepa. | 61. Natrum Sulph. |
| 6. Aloes Soc. | 62. Nitric Acid. |
| 7. Alumina. | *63. Nux Vomica. |
| 8. Ammonium Carb. | *64. Phosphorus. |
| 9. Antimonium Crud. | 65. Platina M. |
| 10. Antimonium Tart. | 66. Podophyllum. |
| 11. Apis Mellifica. | 67. Pulsatilla. |
| 12. Argentum Met. | *68. Rhus Tox. |
| 13. Argentum Nit. | 69. Secal Cor. |
| *14. Arnica Montana. | 70. Sepia. |
| 15. Arsenicum Alb. | 71. Silicea. |
| 16. Aurum Met. | *72. Spongia T. |
| 17. Arum Triph. | 73. Sulphur. |
| 18. Baptisia T. | 74. Thuja O. |
| 19. Baryta Carb. | 75. Veratrum Alb. |
| *20. Belladonna. | |
| 21. Berberis Vulgaris. | |
| 22. Borax. | |
| 23. Bryonia Alb. | |
| 24. Calcarea Carb. | |
| 25. Calcarea Flour. | |
| 26. Calcarea Phos. | |
| 27. Calcarea Sulph. | |
| *28. Calendula. | |
| 29. Carbo Veg. | |
| 30. Causticum. | |
| *31. Chamomilla. | |
| 32. Cina. | |
| 33. Cinchona off. | |
| 34. Colchicum A. | |
| *35. Colocynthis. | |
| 36. Drosera. | |
| *37. Dulcamara. | |
| 38. Euphrasia. | |
| 39. Ferrum Met. | |
| *40. Ferrum Phos. | |
| *41. Gelsemium. | |
| 42. Graphites. | |
| 43. Hepar Sulph. | |
| 44. Helleborus. | |
| 45. Hyoscyamus N. | |
| 46. Ignatia. | |
| 47. Ipecac. | |
| 48. Kali Bich. | |
| 49. Kali Carb. | |
| *50. Kali Mur. | |
| *51. Kali Phos. | |
| 52. Kali Sulph. | |
| 53. Lachesis. | |
| 54. Ledum Pal. | |
| 55. Lycopodium. | |
| *56. Magnesia Phos. | |
| 57. Mircurius Cor. | |

APPENDIX II

1. Acetic Acid.
2. Actaeca Racemosa.
3. Agaricus Mus.
4. Agnus Castus.
5. Ambragrisea.
6. Anacardium O.
7. Arsenicum Iod.
8. Bismuthum.
9. Bovista.
10. Cactus G.
11. Calcarca Ars.
12. Camphora.
13. Cannabis Sativa.
14. Cantharis.
15. Capsicum.
16. Carbolic Acid.
17. Carcinosis.
18. Caulophyllum.
19. Chelidonium M.
20. Cicuta Virosa.
21. Cocculus Ind.
22. Conium M.
23. Crocus Sativa.
24. Crotalus Hor.
25. Croton Tig.
26. Cupurum Ars.
27. Cupurum Met.
28. Digitalis P.
29. Eupatorium Perfol.
30. Fluoric Acid.
31. Glonoine.
32. Hamamelis Vir.
33. Hydrastis.
34. Iodum.
35. Kreosotum.
36. Lac Caninum.
37. Lillum Tig.

38. Magnesia Carb.
39. Magnesia Phos.
40. Medorrhinum.
41. Mezereum.
42. Moschus.
43. Murex.
44. Muriatic Acid.
45. Natrum Carb.
46. Nux Moschata.
47. Opium.
48. Petroleum.
49. Phosphoric Acid.
50. Plumbum Met.
51. Psorinum.
52. Pyrogenium.
53. Ranunculus Bulb.
54. Rhododendron.
55. Rumex C.
56. Ruta G.
57. Sabina.
58. Sambucus N.
59. Sanguinaria C.
60. Sarsaparilla.
61. Spigelia.
62. Stannum Met.
63. Staphysagria.
64. Stramonium.
65. Syphilinum.
66. Tuberculinum.
67. Variolinum.
68. Veratrum Vir.
69. Zincum Met.

ORGANON AND PRINCIPLES OF HOMOEOPATHIC PHILOSOPHY

Hahnemann's Organon of medicine is the high watermark of medical philosophy. It is an original contribution in the field of medicine in a codified form. A study of Organon as well as of the history of homoeopathy and its founder's life story will show that homoeopathy is a product of application of the inductive logical method of reasoning to the solution of one of the greatest problems of humanity namely the treatment and cure of the sick. A thorough acquaintance with the fundamental principles of logic, both deductive and inductive, is therefore essential. The Organon should accordingly be taught in such a manner as to make clear to the students the implications of logical principles by which homoeopathy was worked out and built up and with which a homoeopathic physician has to conduct his daily work with ease and facility in treating every concrete individual case.

The practical portions should be thoroughly understood and remembered for guidance in practical work as a physician.

1. Introductory lectures—10 lectures.

Subjects :

1. What is Homoeopathy ?

It is not merely a special form of therapeutics, but a complete system of medicine with its distinct approach to life, health, disease, remedy and cure. Its holistic, individualistic and dynamistic approach to life, health disease, remedy and cure. Its out and out logical and objective basis of approach. Homoeopathy is nothing but an objective and rational system of medicine.

Homoeopathy is thoroughly scientific in its approach and methods.

It is based on observed facts and data on inductive and deductive logic inseparably related with observed facts and data.

2. Distinct approach of Homoeopathy to all the preclinical, clinical, and para-clinical subjects.

3. Preliminary idea about all the pre-clinical.

4. Hahnemann's organon 5th and 6th Editions—Aphorism 1 to 294.

5. Homoeopathic Philosophy (a) Kent's lectures Close—Lectures and Essays on Homoeopathic in Homoeopathic Philosophy (The Genius of Homoeopathy) (c) H. Roebert's Art of cure by Homoeopathy (d) Dunham's Science of Therapeutics.

6. During the lectures on Homoeopathic Philosophy, the following items should be elucidated.

- (i) The scope of Homoeopathy.
- (ii) The logic of Homoeopathy.
- (iii) Life, Health, Disease and Indisposition.
- (iv) Susceptibility, Reaction and Immunity.
- (v) General philosophy of homoeopathic theory of acute and chronic miasms.
- (vi) Homoeopathic posology.
- (vii) Potentisation and the Infinitesimal dose and the drug potency.
- (viii) Examination of the patient from the homoeopathic point of view.
- (ix) Significance and implications of totality of symptoms.
- (x) The value of symptoms.
- (xi) The homoeopathic aggravation.
- (xii) Prognosis after observing the action of the remedy.
- (xiii) The second prescription.
- (xiv) Difficult and incurable cases—Palliation.

7. Introduction to Organon (5th & 6th editions).

8. History of Homoeopathic Medicine—Medicine as it existed during Hahnemann's time, early life of Hahnemann; his disgust with the existing system of treatment; his discovery of the law of similars; History of the late life of Hahnemann; Introduction of homoeopathy in various countries; Pioneers of homoeopathy and their contributions.

Development of homoeopathy upto the present day. The present trends in the development of homoeopathy. Influence of homoeopathy on other systems of medicine.

9. Hahnemann's Chronic Diseases.

10. A lecture on doctrinal part (Aphorisms 1—70) Topic-wise discussion :

- (a) Aim of physician and highest ideal of cure Aph. 1 & 2.
- (b) Knowledge of physician—Aph. 3 & 4.
- (c) Knowledge of disease which supplies the indication—Aph. 5 to 19.
- (d) Knowledge of medicines—Aph. 19 to 21.
- (e) Evaluation of homoeopathic method from other methods of treatment—Aph. 22 to 69.
- (f) Summary—three conditions for cure—Aph. 70.

B. Lectures on practical parts of organon is to be divided into and taught under the following subjects:—

- (a) What is necessary to be known in order to cure the disease and case taking method.—Aph. 71 to 104.
- (b) The pathogenetic powers of medicine, i.e. drug proving or how to acquire knowledge of medicine—Aph. 105—145.
- (c) How to choose the right medicine—Aph. 147, 148, 149, 150, 153, 155.
- (d) The right dose—Aph. 185, 186, 187, 189, 190, 191, 196, 197, 199, 201, 202 and 203.
- (e) Chronic disease—Aph. 204 206 and 208, .
- (f) Mental diseases—Aph. 210—230 .
- (g) Intermittent disease—Aph. 231, 232, 236, 237, 238, 240, 241, 242.
- (h) Diet, regimen and the modes of employing medicine—Aph. 245, 246, 247, 248, 252, 253, 257, 259, 262, 263, 269, 270, 271, 273, 275, 276, 278, 280, 286, 289, 290, and 291.

C. Clinical lectures on both in and out patient departments. Examination of the patient from homoeopathic point of view :

- (a) Disease determination.
- (b) Disease individualisation.
- (c) Evaluation of Symptoms. } The value of symptoms
- (d) Gradation of symptoms. }
- (e) Selection of medicine and potency and repetition of dose.
- (f) Disease aggravation or homoeopathic aggravation.

(g) Miasmatic diagnosis.

(h) Second prescription.

(i) Prognosis after observing the action of the remedy.

The written papers in Organon and Principles of Homoeopathic Philosophy shall be distributed as follows :—

PAPER I—Aph. 1 to 294.

Hahnemann's life, Introductory chapter of Huhge's "Principles and Practice of Homoeopathy".

PAPER II—Introduction to Organon, History of Homoeopathic Medicine, Chronic Disease, Homoeopathic Philosophy.

PRACTICAL EXAMINATION

Case taking—One case with Miasmatic Diagnosis.

PSYCHOLOGY

Introduction to normal psychology

- (a) Definition of psychology as a science and its differences from other science.
- (b) Conception of the mind.
- (c) Mesmar and his theory. Hypnotism structure of consciousness.
- (d) Freud and his theory—Dynamics of the unconscious.
- Development of the Libido.
- (e) Other contemporary schools of Psychology.
- (f) Relation between mind body in health and disease.
- (g) Perception. Imagination. Ideation. Intelligence.
- (h) Cognition. Conation. Affect. Instinct. Sentiment. Behaviours.

EXAMINATION

B.H.M.S. GRADED DEGREE COURSE EXAMINATION

7. Admission to examination, scheme of examination etc. : (i) A candidate who fulfills any of the following conditions may be admitted to the B.H.M.S. (Graded Degree Course) examination :—

- (a) he holds a Diploma in Homoeopathy or has an equivalent examination and has regularly attended the following theoretical and practical courses of instructions in the subjects of the examination over a period of atleast 1½ years subsequent to his passing the Diploma examination in a Homoeopathic College to the satisfaction of the Principal of the college.

Provided that teachers of Homoeopathic Colleges or Homoeopathic Physicians working in Homoeopathic Dispensaries or Hospitals holding a Diploma obtained after 4 years of study or possessing qualifications in the Third Schedule of the Act and having a minimum of three years of regular teaching or clinical experience.

(b) not being a teacher of a Homoeopathic College or a Homoeopathic Physician in a

Dispensary or Hospital run by the Central Government or a State Government, he holds, a Diploma in Homoeopathy obtained after 4 years of study or possesses qualifications included in the Third schedule of the Act, and has eight years' professional experience.

The course of minimum number of lectures, demonstrations and practical/clinical classes in the subjects shall be as follows :

Subjects	Theoretical	Practical/tutorial/Clinical classes.
1	2	3
*Introductory lectures.	150 (Including demonstration, practical classes.)	
Pathology	40 hrs	20 hrs
Biochemistry	40 hrs	20 hrs
Preventive, social Medicine including health education & Family Medicine	60 hrs	20 hrs
Repertory	80 hrs	50 hrs
Materia-Medica including Pharmacological action of drugs	200 hrs (in 1 1/2 years)	100 hrs (2 months of clinical training in homoeo. OPD & IPD as clinical clerkship)
Organon & Philosophy	100 (in 1 1/2 years)	75
Practice of Medicine including homoeopathic therapeutics	200 (in 1 1/2 years)	100-(2 months of clinical training in OPD and IPD as clinical clerkship)
Children's diseases }	40	15
Mental diseases } (including Homoeo. Therap.)	40	15
Skin diseases } (Homeo. Therap.)	20	15
Surgery including homoeopathic therapeutics.	150 (in 1 1/2 years)	100-(2 months of clinical training in OPD & IPD as clinical clerkship)
E.N.T.	15	15
Eye	25	15
Dental	15	10
Radiology	15	10
Obstetric & Gynaecology including Homoeo. therapeutics and infant Hygiene.	100	50 (2 months of training in OPD & IPD as clinical clerkship).

Note : The total number of minimum hours prescribed in 1½ years comes to 2000 during the course and these hours should be utilised fully for teaching and training programme.

*The students should be given introductory lectures on the importance of Biochemistry and Pathology in Homoeopathic practice acquaintance with pharmacological action of some of the commonly used modern drugs so as to give them idea about iatrogenic diseases caused by these modern drugs. They should also be exposed to the greater details about the history of medicine in general with special reference to the emergence of Homoeopathy; contribution made by Hahnemann to medicine in general; the history of the development of Homoeopathy in India; a brief study of logic psychology and psychiatry and introduction to Biostatistics; the role of physician in the changing society; National Health and Family Welfare needs and

programmes; applied Materia Medica and the diseases; various schools of thought in Homoeopathy and their critical evaluation; comparative study of fundamental concept of treatment in various systems of medicine.

Greater emphasis should be laid on teaching of homoeopathic materia medica with the help of drug pictures of important drugs and on the homoeopathic philosophy.

(ii) The B.H.M.S. graded Degree examination shall be divided into two parts and the two parts shall comprise of the following subjects :—

Part I	Part II
(i) Biochemistry & Pathology	(i) Practice of medicine with homoeopathic therapeutics
(ii) Preventive and Social Medicine (including health education and family medicine).	(ii) Surgery with homoeopathic therapeutics.
(iii) Repertory	(iii) Obstetric & Gynaecology with homoeopathic therapeutics
	(iv) Materia Medica
	(v) Organon, Homoeopathic philosophy.

(iii) The examination in part I shall be held at the end of six months and part II at the end of eighteen months. But the candidate shall have an option to take the examinations in parts I and II jointly at the end of 18 months.

(iv) The examination shall consist of written, oral, practical and/or clinical tests as provided hereinafter, three hours being allowed for each paper.

Part I

(a) The examination in biochemistry and pathology shall consist of one theoretical paper, one practical examination and one oral examination.

(b) The examination in preventive and social medicine including health education and family medicine shall consist of one theoretical paper, one oral examination and one practical examination in respect of spotting and identification of specimens.

(c) The examination in repertory shall consist of one theoretical paper, an oral examination and a practical examination in case-taking, analysis and evaluation of symptoms and deciding the line of treatment.

Part II

(a) The examination in medicine shall consist of two theoretical papers, one oral examination and one bed-side practical examination in case-taking with a view to determining the nosological and therapeutic diagnosis from the Homoeopathic point of view. Time allotted shall be half an hour.

(b) The examination in surgery shall consist of one theoretical paper, one oral examination and one clinical examination. Maximum one hour may be allowed to each candidate for the examination of and

report on his case with special reference to the scope of Homoeopathic therapeutics, vis-a-vis the necessity of surgical treatment in the particular case.

(c) A practical examination in which questions on the use of surgical instruments, appliances and X-Ray films shall be asked.

(d) The examination in Obstetrics and Gynaecology and infant hygiene shall consist of one theoretical paper, an oral examination including questions on pathological specimens, models and X-Ray films and a clinical examination, maximum half an hour being allowed to a candidate for the examination of and report on his case of obstetric and gynaecology with special reference to therapeutic diagnosis from the Homoeopathic point of view.

(e) The examination in Materia Medica shall consist of :

(1) two theoretical papers, each paper must having one compulsory question as to the
(i) principles of Homoeopathic materia medica;
(ii) special feature of Homoeopathic materia medica as compared with those of other systems of medicine; (iii) sources of symptoms
(iv) various dynamic relation of drugs etc., and
(v) relation of materia medica with pathology and other subjects;

(2) an oral examination; and

(3) bed-side practical examination. Time allotted shall be one hour.

(v) The examination in organon shall consist of
(a) two theoretical papers, (b) oral examination and
(c) bed-side practical examination in the application of the tenets of the organon in case-taking, evaluation of symptoms and deciding the line of treatment. Time allotted shall be two hours.

(vi) In order to pass the B.H.M.S Graded Degree Course examination, a candidate must pass in parts I and II of the examination.

(vii) Pass marks in all subjects both homoeopathic and allied subjects shall be 50 per cent in each part (written, oral and practical).

(viii) A candidate who obtains at least 75 per cent or above of the aggregate of marks in all subjects shall be deemed to have passed the examination with honours, provided that he has passed the examination in the first attempt.

(ix) Full marks for each subject and the minimum number of marks required for passing shall be as follows :—

(ix) Full marks for each subject and the minimum number of marks required for passing shall be as follows:

Subjects	Written		Oral		Practical		Total	
	Full Marks	Pass Marks	Full Marks	Pass Marks	Full Marks	Pass Marks	Full Marks	Pass Marks
Paper I								
Biochemistry and Pathology	100	50	50	25	50	25	200	100
Preventive, Social medicine including health education and family medicine	100	50	50	25	50	25	200	100
Repertory	100	50	50	25	50	25	200	100
Paper II								
Practice of medicine	200	100	100	50	100	50	400	200
Surgery	100	50	50	25	50	25	200	100
Obstetrics & gynaecology	100	50	50	25	50	25	200	100
Materia Medica	200	100	50	25	50	25	300	150
Organon & Homoco. Philosophy	200	100	50	25	50	25	300	150

8. Results and Readmission to Examination.—(i) Every candidate for admission to an examination shall, 21 days before the date fixed for the commencement of the examination, send to the authority concerned his application in the prescribed form alongwith the examination fee.

(ii) The examining body shall as soon as may be after the examination publish a list of successful candidates arranged in the following manner—

(a) the names and roll numbers of the first ten candidates in order of merit, and

(b) the roll numbers of other arranged serially.

(iii) Every candidate shall, on passing the examination, receive a certificate in the form prescribed by the examining body concerned.

(iv) A candidate who appears at the examination but fails to pass in a subject or subjects, may be admitted to a supplementary examination in the subject or subjects in which he had failed after six weeks from the publication of result of the first examination on payment of the prescribed fee alongwith an application in the prescribed form.

(v) If a candidate obtains pass marks in the subject or subjects at the supplementary examination of the subsequent examination shall be declared to have passed at the examination as a whole.

(vi) If such a candidate fails to pass in the subject or subjects at the supplementary examination, he may appear in that subject or subjects again at the next annual examination on production of a certificate (in addition to the certificate required under the regulations), to the effect that he had attended to the satisfaction of the Principal, a further course of study during the next academic year in the subject or subjects in which he had failed, provided that all the parts

of the examination shall be completed within four chances (including the supplementary one), from the date when the complete examination came into force for the first time.

(vii) If a candidate fails to pass in all the subjects within the prescribed four chances, he shall be required to prosecute a further course of study in all the subjects of and in all parts for one year to the satisfaction of the head of the College and appear for examination in all the subjects :

Provided that if a student appearing for Part II B.H.M.S. examination has only one subject to pass at the end of prescribed chances, he shall be allowed to appear at the next examination in that particular subject and shall complete the examination with this special chance.

(viii) All examinations shall ordinarily be held on such dates, time and places as the examining body may determine.

(ix) The examining body may, under exceptional circumstances, partially or wholly cancel any examination conducted by it under intimation to the Central Council of Homoeopathy and arrange for conducting the re-examination in those subjects within a period of thirty days from the date of such cancellation.

9. Examiners.—(i) No person other than the holder of a Diploma obtained after 4 years' of study or a Degree in Homoeopathy or a person possessing qualification included in the third Schedule shall be appointed as internal or external examiner or paper-setter for the conduct of a professional examination for any of the B.H.M.S (Graded Degree) course :

Provided that—

(a) no such person shall be appointed as an internal examiner unless has at least three years teaching experience in the subject.

- (b) examination to person below the rank of Reader/Assistant Professor in the subject of a Degree level institution shall be appointed as an internal examiner.
- (c) no person shall be appointed as an external examiner in any allied medical subject unless he possesses a recognised medical qualification as required for appointment to a teaching post in accordance with Annexure 'E' of the Homoeopathy (Minimum Standard of Education) Regulations, 1983.
- (d) external examiner shall be drawn only from the teaching staff of Homoeopathic Colleges and Colleges of Modern Medicine.
- (e) not more than one-third of the total number of external examiners shall be drawn from amongst practitioners in Homoeopathy or Modern Medicine who, in the opinion of the examining body, are practitioners of repute and who have obtained a Homoeopathic qualification or a medical qualification recognised under the Indian Medical Council Act, 1956.
- (f) persons in Government employment may also be considered for appointment as external examiners provided they possess a medical qualification as specified in sub-regulation (e) above.
- (g) a paper-setter may be appointed as an internal or external examiner.

(ii) The examining body may appoint a single moderator or moderators not exceeding three in number for the purpose of moderating question papers.

(iii) Oral and practical examinations shall as a rule be conducted by the respective internal and external examiners with mutual co-operation. They shall each have 50% of the maximum marks out of which they shall allot marks to the candidates appearing at the examination according to their performance and the marks-sheet so prepared shall be signed by both the examiners. Either of the examiners shall have the right to prepare and sign and send separate marks-sheet separately to the examining body together with his comments. The examining body shall take due note of such comments but it shall declare results on the basis of the mark-sheets.

(iv) Every Homoeopathic College shall provide all facilities to the internal and external examiners for the conduct of examinations, and the internal examiner shall make all preparations for holding the examinations.

(v) The external examiner shall have the right to communicate to the examining body his views and observations about any shortcomings or deficiencies in the facilities not provided by the Homoeopathic College.

(vi) He shall also submit a copy of his communication to the Central Council for such action as the Central Council may consider fit.

Dr. P. L. VERMA, Secy.

